SANDHYA AND HAVAN CEREMONY

Maṅṭras in Roman, Sańskriṭ and English

(With Selected, over 50 Bhajans**)**

Sandhya
Sangeet-Sandhya
General Yajña

PREPARED BY

Dr. Som Pal M.A., Ph. D.
(Sanskrit and Vedic Literature)

Vishva Bharti Parishad USA
Arya Samaj Inland Empire

www.AryaSamajIE.org

The Key for pronunciation and Transliteration

Pronunciation guide

Roman	Nāgri	sound	Roman	Nāgri	sound
a	अ	**a**pple	ḍ	ड	**d**rum, roa**d**
ā	आ	f**a**ther, **a**rm	ḍh	ढ	re**dh**aired,
i	इ	f**i**ll, ch**i**ll	ṇ	ण	fu**n**d
ī	ई	Pol**i**ce, h**ea**r, d**ea**r	t	त	**t**or**t**illa
u	उ	f**u**ll, p**u**t	th	थ	**th**umb, **th**orn
ū	ऊ	r**u**de, r**u**le, c**oo**l	d	द	fa**th**er, bro**th**er
e	ए	pr**e**y	dh	ध	a**dh**ere,
ai	ऐ	**ai**sle	n	न	**n**ot, **n**ear
o	ओ	g**o**, s**o**	p	प	**p**ut, **p**ass, **p**aste
au	औ	h**au**s, s**au**s	f	फ	u**ph**ill, **f**ast
ṁ/ṃ	अं	su**m**s, so**n**s	b	ब	**b**ear, **b**oat
ḥ	अः	o**h**, yea**h**	bh	भ	a**bh**or,
k	क	see**k**, **c**at, **k**ola	m	म	**m**ap, **m**an
kh	ख	Broo**kh**urst	y	य	**y**et, **y**es
g	ग	**g**et, **g**o, **g**roup	r	र	**r**ed, **r**oad
gh	घ	lo**gh**ut,	l	ल	**l**ook, **l**ead
ṅ	ङ	si**ng**, ri**ng**	v	व	**v**ery, **v**ast
c	च	**ch**ina, **ch**air	ś	श	**s**ugar, **s**ure, o**s**o
ch	छ	Chur**ch**ill, **Ch**anel	ṣ/ś	ष	bu**sh**, goldfi**sh**
j	ज	**j**ump, **j**ungle	s	स	**s**o, **s**ome, **s**aint
jh	झ	Bei**jj**ing	h	ह	**h**ear, **h**ammer
ñ	ञ	si**n**g, ca**ny**on	ṛ/ṝ	ऋ	br**i**m,
ṭ	ट	**t**rue, wa**t**er	kś	क्ष	autorickshaw
ṭh	ठ	ha**th**-yoga	jñ	ज्ञ	le**gi**on

विशेष धन्यवाद

इस कठिन कार्य को संपन्न करने में विभिन्न विद्वान् सहयोगियों का सहयोग लिया गया है।
इस पुस्तिका में हमने कापी-पेस्ट करने का प्रयास नहीं किया है। मंत्रों के अर्थ अत्यंत विचार-विमर्श के बाद ऋषि और देवता को ध्यान में रखते हुए लिखे गये है।
निम्न इसमें परम सहयोगी रहे:

डॉ सुमेधा

आचार्या एवं संस्थापिका श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरूकुल चोटीपुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ सविता रेड्डी

उच्चतम शिक्षिका, गुरूकुल चोटीपुरा

डॉ. यश मनचन्दा एवं उमा मनचन्दा

दोनों ने ही अथक परिश्रम के साथ अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी-भाषा, दार्शनिक विचार धारा के साथ मंत्रों के अर्थ चयन में परम सहयोग दिया है। हम इनके परिश्रम और ज्ञान के आभारी हैं।

आर्थिक सहयोग, दान

हम उदार दानी परिवारों, व्यक्तियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके उदार दान से यह सन्ध्या-हवन पुस्तिका प्रिंट होकर आपके हाथों तक पहुंची है। यह हमारे सत्संगियों के लिये तो लाभकारी होगी ही, साथ ही युवा पीढी के लिये बहुत ही उपयोगी होगी। नई पीढी को इस पुस्तक से मंत्रों के पढने में, समझने में आसानी रहेगी साथ ही वैदिक सन्ध्या-हवन समझकर करना सीख सकेंगे।

अनु व विनोद सागर परिवार
चेतना व रोहित खन्ना परिवार
न्यू स्पाइस वर्लड (मोनिका व राजीव कुमार परिवार)
ए क्रिएशनस् (नीतू व सौरव धीर परिवार)
सुश्री शोभा सोबती

पाठकों से निवेदन

हिन्दू धर्म एक ऐसा समुद्र है जहां हर एक पंडित, विद्वान, संत सभी अपने-अपने तरह से संस्कार, पाठ-पूजा करते-कराते हैं । हर एक मंदिर के भी अलग-अलग नियम एवं तरीके हैं। एकता नही।

आर्य समाज ने इस विषय में बहुत बड़ा काम किया है। सभी वैदिक ग्रन्थों का मनन-अध्ययन करके संस्कारों में समानता लाने का प्रयास किया है, जिससे एकरूपता बनी रहे और शास्त्रों की प्रमाणिकता भी।

यह पुस्तिका कुछ विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विशेष कार्यक्रम के लिये तैयार की गयी है, इसमें आपका कुछ मतभेद हो सकता है ।

संस्कृत मन्त्रपाठ कठिन होता है इसमें कोई दो राय नहीं । जिन्होनें संस्कृत नही पढी, उनके लिए और भी कठिन है। इसी को ध्यान में रखते हुए शब्दों को विच्छेद करके (तोड़कर) लिखा गया है, लेकिन अलग करते समय मूल शब्द को ध्यान में रखा गया है। ताकि शब्द का अपशब्द न बन जाये ।

अमेरिकन-भारतीय युवा पीढी, हमारा कल और उज्ज्वल भविष्य है । हमारा भविष्य उन्हीं पर निर्भर करता है। हम चाहते हैं कि उन्हें सभी रीति-रिवाजों, कार्यकलापों व सामाजिक क्रियाकलापों में सम्मिलित किया जाये। आज हम उन्हें सिखायें ताकि वे हमारी संस्कृति, सभ्यता और विचार पद्धति की महानता को समझ सकें और उस पर गर्व कर सकें।

हम उन सभी का धन्यवाद एवं अभिनन्दन करते हैं जो किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में किसी भी रूप में सहायक हैं । चाहें वह धार्मिक, सांस्कृतिक या शैक्षिक किसी भी क्षेत्र में हैं। आपका योगदान एक अच्छे समाज के निर्माण में अहम् भूमिका निभाता है, विशेषकर जब आप युवा निर्माण के लिए अपना समय, ज्ञान, धन या और किसी भी प्रकार से सहायता करके योगदान देते है। इसके लिए आप सभी धन्यवाद के पात्र है।

कृण्वन्तो विश्वम् -आर्यम्

आओ प्रयास करें, श्रेष्ठ बनाने का

संध्या क्या है, क्यों करें ?

जीवन की चिन्ताओं से छुटकारा दिलाने वाली अभी तक कोई दवाई नहीं बन सकी है। भाग-दौड़ से भरे इस जीवन में प्रत्येक प्राणी मन की शान्ति की खोज में है। केवल प्रभु-भक्ति ही एकमात्र ऐसा उपाय है जो सबको मन की शान्ति दे सकता है ।

सन्ध्या के अनेक अर्थ हैं। सम् = भली प्रकार; ध्या = ध्यान। जोडना/योग करना संध्या कहलाता है । ध्यान क्या है, इसके लिए योग दर्शन-ऋषि ने लिखा है **"तत्रैकतानता ध्यानम्"** किसी पर एकटकी सोचना, विचारना ही ध्यान है। सुबह एवं साम के समय को भी संध्या कहते हैं, उस समय रात-दिन एवं दिन-रात का मिलन हो रहा होता है। जब हम एकान्त में बैठ कर मन को एकाग्र करके पूरे मनोयोग से सबको बनाने वाले भगवान का ध्यान करते हैं उसी को संध्या कहते हैं क्योंकि हमारा योग उस परम-शक्ति के साथ हो रहा है जो शक्ति का भण्डार है।

संध्या एक व्यक्तिगत भक्ति है इसे किसी व्यक्ति-समूह की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आपको एकान्त एवं शांत जगह की आवश्यकता है । प्रातः उषाकाल एवं साम को सूर्यास्त का समय इसके लिये उचित माना गया है।

अभ्यास के लिए इसको समूह, मंदिर या किसी भी भक्ति-स्थल पर किया जा सकता है ।

संध्या में नहाकर बैठना चाहिए या फिर कम से कम हाथ-मुँह-पैर धो लेने चाहिएं । स्थान पवित्र (साफ-सुथरा), हवादार एवं शान्त होना चाहिए । कोई भी अपनी आसानी वाले आसन में बैठना चाहिए । पीठ की रीढ, छाती एवं गर्दन सीध में होने चाहिएं । भूमि पर गद्देदार आसन लेकर बैठे । आलस दूर करने के लिए कुछ पानी पी सकते हैं तथा कुछ पानी साथ लेकर बैठें । आपको उत्साह की अनुभूति होनी चाहिए, आलस्य नहीं ।

मुख **दिशाः** सुबह को पूर्व दिशा में, साम को पश्चिम दिशा में मुख करें;
या जिधर से हवा आती हो उस तरफ मुख करके बैठें ।
या जिधर को आप सुविधानुसार ठीक समझे उधर को मुख करके बैठ सकते हैं।
मुख्य बात तो संध्या करने से है । ऐसा उपनिषद् ऋषि का कहना है ।

गायत्री मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋग्वेद् 3.62.10, यजु. 36.3 ऋषि विश्वामित्र देवताः सविता

(ओ३म्) परमेश्वर (भूः) भूमि; प्राणों से भी प्यारा; जीवन दाता (भुवः) आकाश; दुःख हरने वाला (स्वः) धन; सुख देने वाला (तत्) उस (सवितुः) उत्पन्न करने वाले का (वरेण्यम्) वरण करने/अपनाने योग्य (भर्गः) शुद्ध/ज्ञानस्वरूप; झोलियाँ भरने वाले (देवस्य) देव/ईश्वर का (धीमहि) ध्यान करें । (धियः) बुद्धियों को (यः) जो (नः) हमारी (प्रचोदयात्) प्रेरित करे; शुभ कर्मों में लगाए ।

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम दुखियों के कष्ट हरता है तू ।
तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु मे तू हो रहा है विद्यमान ।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर ! हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥

इस मंत्र में प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमारी बुद्धियों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा करे। वह ईश्वर सर्वव्यापक है, तथा सब कुछ जानता है। मनन पूर्वक इस मन्त्र का जप करने से मन की चंचलता एवं गलत रास्ते पर चलने की इच्छा पर नियन्त्रण होता है।

गायत्री मन्त्र की महिमा बहुत गायी गयी है। इसकी महिमा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इस मन्त्र को 5 नामों से जाना जाता है।

१ गायत्री मन्त्र। २ सावित्री मन्त्र। ३ गुरु मन्त्र ४ महा मन्त्र ५ वेदों का मुख्य मन्त्र

गायत्री मन्त्रः गायत्री छन्द में लिखा होने के कारण इस मन्त्र को गायत्री नाम से जाना जाता है।

निरुक्तकार यास्काचार्य लिखते हैं "गायत्री गायते स्तुतिकर्मणः" Yāskāchārya Nirukta 7.12 इसका गान भगवान की भक्ति के लिए किया जाता है । "गायन्तम् त्रायते इति गायत्री" जो इसका गान करते है वे तर जाते हैं; इसलिये भी इसको गायत्री नाम से जाना जाता है ।

सावित्री मन्त्रः इस मन्त्र का देवता सविता, (जो जन्म देता है और माँ की तरह सबको पालता भी है) होने से इसको सावित्री/सविता मन्त्र के नाम से भी जाना जाता है ।

गुरु मन्त्रः गुरु के पास पारम्परिक शिक्षा के लिए जब किसी विद्यार्थी को लेकर जाते थे तब गुरू सबसे पहले इसी मन्त्र को गुरु-मन्त्र के रूप में देता था/है । क्योंकि इस मन्त्र में अच्छी बुद्धि की प्रार्थना की गयी है जो कि विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। आज भी गुरूकुलों में यही प्रथा है ।

महा मन्त्रः इस मन्त्र की महिमा सबसे अधिक गायी गई है। ऋषि विश्वामित्र इसके दृष्टा हैं, मनु जैसो ने इसकी महिमा गायी है।

वेदों का मुख्यः मन्त्र वेदों उपनिषदों में भी इसका उल्लेख मिलता है। चारों वेदों में इसका पाठ किसी न किसी रूप में हुआ है इसलिए इसका यह नाम पड़ गया ।

गायत्री मंत्र के बाद यहाँ से शुरू करें.....

ओम् शन्नो देवी:-अभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्त्रवन्तु न:।

यजु. ३६.१२। ऋग्, १०.९.४ ऋषि: दध्यंग अथर्वा, त्रिशिरास्त्वाष्ट्र, सिन्धुद्वीपो वाम्बरीष, देवता आपः

हे दिव्य गुण वाले, सर्वव्यापक प्रभो! आप हमारी मनोकामनाएं पूरी करें,
हमें आनन्द प्रदान करो और हम पर चारों ओर से सुख-शान्ति की वर्षा करो ।

इस मन्त्र का पाठ करके तीन बार आचमन करें। फिर दाएं हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर अगले दो मन्त्रों का पाठ करते हुए अंग स्पर्श करें ।

ओ३म् वाक् वाक् ।	(मुख, दोनों ओर)
ओम प्राणः प्राणः ।	(नासिका, दोनों ओर)
ओम् चक्षुः चक्षुः ।	(आंखें, दोनों)
ओम् श्रोत्रम् श्रोत्रम् ।	(कान, दोनों)
ओम् नाभिः ।	(नाभि)
ओम् हृदयम् ।	(हृदय)
ओम् कण्ठः ।	(कण्ठ)
ओम् शिरः ।	(शिर)
ओम् बाहुभ्याम् यशो-बलम् ।	(दोनों भुजाएं)
ओम् करतल-कर-पृष्ठे ॥	(हाथ, दोनों ओर)

पंच महायज्ञ विधि

हे ईश्वर! आपकी कृपा से हमारी ज्ञानेन्द्रियां ओर कर्मेन्द्रियां यशस्वी एवं बलशाली हों ।
हम अपनी वाणी-मुख, प्राण-नासिका, दृष्टि-आंखें, श्रवणशक्ति-कान, नाभि, हृदय,
गला, सिर, बांहें, हाथ आदि सभी के द्वारा यश, बल एवं ऐश्वर्य को पा सके ।

मार्जन मन्त्र

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि ।
ओम् भुवः पुनातु नेत्रयोः ।
ओम् स्वः पुनातु कण्ठे ।
ओम् महः पुनातु हृदये ।
ओम् जनः पुनातु नाभ्याम् ।
ओम् तपः पुनातु पादयोः ।
ओम् सत्यम् पुनातु पुनः शिरसि ।
ओम् खम् ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

पंच महायज्ञ विधि

हे ईश्वर! आप कृपा करके हमारे शरीर और इन्द्रियों के दोषों को दूर करके हमें पवित्र बनाएं । हे प्राणों से प्यारे! हमारी बुद्धि को पवित्र करो, हे दुखविनाशक! हमारी आँखों के दुःख दूर कीजिए, हे सुखरूप! हमारी वाणी में सबको सुखदेने वाली मिठास दीजिए, हे महान्! हमारे हृदय में महानता दीजिए, हे सबके उत्पादक! हमें दीर्घायु दीजिए, हे परमतपस्वी! हमारे पैरों में तप/कठिन कार्य करने की शक्ति दीजिए, हे सत्यरूप! हमें सच्चाई का मार्ग दिखाएं,

हे सर्वव्यापक! हमारे सारे शरीर को पवित्र कीजिए ।

प्राणायाम मन्त्र

ओम् भूः। ओम् भुवः। ओम् स्वः। ओम् महः।
ओम् जनः। ओम् तपः। ओम् सत्यम्।

तैत्तिरीय आ. १०.२७

हे प्रभो ! आप जीवन दाता हैं हमें लम्बी आयु दें, सभी दुःखों को दूर करें, सुख प्रदान करें, हमें महान, न्यायप्रिय, सत्यवादी बनने की शक्ति दें ।

इस मन्त्र का पाठ करके कम से कम तीन बार प्राणायाम करें ।
प्राणायाम मन को एकाग्र एवं ध्यान लगाने में सहायता करता है।

अगले तीन मन्त्र अघमर्षण/पापनाशक मन्त्र हैं ।

तीनो मन्त्रों का ऋषि: अघमर्षण मधुछन्दस, देवता: भाववृत्तम्

ऋतम् च सत्यम् चाभीद्धात् तपसो अध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ ऋग. १०.१९०.१

समुद्राद् अर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी ॥ ऋग. १०.१९०.२

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वम् अकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ऋग. १०.१९०.३

प्रभु के तप से ऋत व सत्य की उत्पत्ति हुई। (प्रकृति संबन्धित नियम ऋत और जीव विषयक नियम सत्य)। इन्हीं ऋत व सत्य के आधार पर तमस् पूर्ण प्रकृति सृष्टि के रूप में साकार हुई। मानो रात्रि के समुद्र को मथकर ही सृष्टि के दिन का निर्माण किया गया है। इसी रात-दिन के साथ काल और संवत्सर का निर्माण कर समय का निर्धारण किया है।

द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी लोक, सूर्य, चन्द्रमा आदि तारे; दिन, रात, क्षण, मुहूर्त, बादल, समुद्र आदि सब कुछ पहले के समान ही अब भी बनाए हैं।

क्या मैं यह सबकुछ बना सकता हूँ? नहीं। तब फिर मुझे किस बात का घमण्ड है? इससे अहं (घमण्ड) का नाश होता है जो पाप से दूर रहने में सहायता करता है । अहम् (घमण्ड) से ही पाप का जन्म होता है। ऐसा विद्वान, ऋषियों का मानना है।

अगले मन्त्र का पाठ करके फिर तीन बार आचमन करें ।

ओम् शन्नो देवी-रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।

शंयोरभि स्रवन्तु नः। यजु. ३६.१२ । ऋग्. १०.९.४

ऋषिः दध्यंग अथर्वा, त्रिशिरास्त्वाष्ट्र, सिन्धुद्वीपो वाम्बरीष, देवता आपः

हे दिव्य गुण वाले, सर्वव्यापक प्रभो! आप हमारी मनोकामनाएं पूरी करें, हमें आनन्द प्रदान करो और हम पर चारों ओर से सुख-शान्ति की वर्षा करो ।

(आचमन का मुख्य अभिप्राय आलस को दूर करने का है ।
ताकि निद्रा न आये, आपके अन्दर उत्साह एवं ताजगी बनी रहनी चाहिए)।

(यहाँ आचमन आवश्यक भी नही है)।

मनसा परिक्रमा मन्त्राः

प्राची दिगग्निः-अधिपति-रसितो रक्षिता-दित्या इषवः|

तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम

इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु|

यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम् वो जम्भे दध्मः॥

अथर्व, ३.२७.१ ऋषि अथर्वा, देवता अग्नि

प्राची आगे बढ़ने की दिशा है। जो आगे बढ़ता है वही अग्नि, इसका स्वामी हो जाता है। वह अबद्ध होता हुआ प्रगति के मार्ग का पथिक बनता है। आगे बढ़ते सूर्य के समान वही सफलताओं को पाता है। हम उस पूर्व चलने वाले को नमस्कार करते है। उसकी रक्षक शक्तियों को नमस्कार करते है। इस पूर्व दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते हैं। ताकि हम परस्पर मित्रता एवं भ्रात्र-प्रेम जगा सके ।

दक्षिणा दिग् इन्द्रो-अधिपतिस्-तिरश्चिराजी (तिरश्चिराजो चमकतो विद्यत)
रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽ-धिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम्
वो जम्भे दध्मः। अथर्व, ३.२७.२ ऋषि अथर्वा देवता इन्द्र

दक्षिण निपुणता की दिशा है। हम भी आपसे दक्षता लेकर निपुणताओं को प्राप्त करें। इस दिशा का स्वामी परम-ऐश्वर्यशाली विद्युतराज इन्द्र है। इस निपुणता की कुंजी हमारे पितरों की दूरदर्शितापूर्ण शिक्षा हैं। दक्षता के स्वामी इन्द्र को नमस्कार करते हैं। इन्द्र की उन रक्षक शक्तियों एवं रक्षात्मक कवच को प्रणाम करते हैं। इस दक्षिण दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते हैं। सबका सभी से प्यार हो।

प्रतीची दिग्वरुणो अधिपतिः पृदाकू (पृदाकु=शक्तिशाली)
रक्षिता-अन्नमिषवः।
तेभ्यो नमो-अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम्
वो जम्भे दध्मः। अथर्व. ३.२७.३ ऋषि अथर्वा देवता वरुण

प्रतीची, पीछे की दिशा है। इस दिशा का स्वामी वरुण है, जो सब जगह व्यापक है, हमारे पीठ पीछे भी। वह इस संपूर्ण पृथिवी तथा इस पर होने वाले सभी खाद्य पदार्थों का रक्षक है। हम उस सर्वव्यापी वरुण को नमस्कार करते है । स्वामी वरुण की उन व्यापक शक्तियों को नमस्कार करते हैं। इस प्रतीची दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते है। सभी प्रेम से रहें।

उदीची दिक् सोमो-अधिपतिः
स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः।
तेभ्यो नमो-अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम्
वो जम्भे दध्मः। अथर्व. ३.२७.४ ऋषि अथर्वा देवता सोम

उदीची, उदारता की उत्तर दिशा है। इस दिशा का स्वामी सोम, सौम्य, सरल स्वभाव है। सौम्यता से उत्पन्न उसके तेज की अग्नि ही उसके रक्षक बाण हैं। हम उत्तर दिशा के स्वामी सोम को नमन करते हैं। हम उसकी सरलता, सहजता, सौम्यता की रक्षा शक्तियों को नमन करते हैं। इस उत्तर दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते हैं। सभी का परस्पर प्रेम हो।

ध्रुवा दिग्विष्णुर् -अधिपतिः कल्माषग्रीवो
रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमो-अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम्
वो जम्भे दध्मः । अथर्व. ३.२७.५ ऋषि अथर्वा देवता विष्णु

ध्रुव, स्थिर, नीचे की दिशा है, जिसका स्थिर होना ही आवश्यक है। विष्णु, सबका पालक, इस ध्रुव दिशा का स्वामी है। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, वृक्षों, हरियाली को पैदा कर हमारे जीवन की रक्षा करता है। हम ध्रुव दिशा के उस पालक, रक्षक विष्णु को नमन करते हैं। उसकी पालक एवं रक्षा शक्तियों को नमन करते हैं । इस ध्रुव दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते हैं।

ऊर्ध्वा दिग्-बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो
रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽ-अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मस्तम्
वो जम्भे दध्मः. अथर्व. ३.२७.६ ऋषि अथर्वा देवता बृहस्पति

ऊर्ध्वा, ऊपर की दिशा है। इस दिशा का स्वामी बृहस्पति, ज्ञानवान है। वह ज्ञान, श्वेत, पवित्र है। हम पर ज्ञान की वर्षा ही उसके रक्षक बाण हैं। हम ऊर्ध्व दिशा के स्वामी बृहस्पति को नमस्कार करते हैं। उसकी पवित्र, ज्ञानवान रक्षा शक्तियों को नमस्कार करते हैं। इस ऊर्ध्व दिशा में, जो कोई हमसे द्वेष करता है और या हम किसी से द्वेष करते हैं, वह सभी, हे ईश्वर हम आपके न्याय के जबड़े में रखते हैं। इस न्याय को हम आप पर छोड़ते हैं। सभी के साथ सबका प्यार हो।

उपस्थान मन्त्र

(समीप बैठना या समीपता का अनुभव करना)

उद्वयम् तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। यजु. ३५.१४ ऋषि आदित्य देव; देवता सूर्य

हम उस, अंधकार से दूर, प्रकाशमय, जो सूर्य में भी प्रकाश का देने वाला है। जो स्वयं ही, उत्तम से भी उत्तम सूर्य रूप परम ज्योति का भंडार है। उसी ज्ञानवान, प्रकाशमान परमात्माका अनुभव अपने सब ओर से करें।

उदुत्यम् जातवेदसम् देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ यजु. ३३.३१ प्रस्कण्व ऋषि, देवता सूर्य

आश्चर्यजनक, जगत के कण-कण में देदीप्यमान, चमक-दमक वाले सूर्य को जैसे उसकी किरणें संपूर्ण जगत पर प्रकाश डालकर, उसे चमकाकर उसका आभास कराती हैं, वैसे ही मैं भी उस ज्योतिपुंज परमेश्वर का अनुभव कर रहा हूं।

चित्रम् देवाना-मुद्गाद्-अनीकम्
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष~म् सूर्य
आत्मा जगतस् तस्थुषश्च स्वाहा। यजु. ७.४२ कुत्स ऋषि; देवता सूर्य

जो देव अद्भुत है। जो जानने योग्य, परम बलशाली, संपूर्ण संसार की आँख है। मित्र स्वभाव वाले, श्रेष्ठ आचरण वाले एवं उत्तम ज्ञान वालों का वही उपास्य एवं दर्शनीय है। जो इस भूमि, द्यौलोक ओर अंतरिक्ष में भी, इस जगत की आत्मा बनकर इसी में समाया है, उसी की उपासना में मैं भी मगन हो गया हूँ।

ओम् तच्चक्षुर् देवहितम् पुरस्तात्-शुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शत~म्
श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्।

यजु. ३६.२४ ऋषि दध्यंग, अथर्वा; देवता सूर्य

हे ब्रहम, आप ज्ञानवान हैं। आप अनादिकाल से ही देवों/विद्वानों के हितकारी हैं | खुले नेत्रों के समान सब कुछ आपकी दृष्टि में है और सब कुछ भली-भाँति जानते हैं। हमारी कामना है कि हम सौ वर्षो तक आपकी रचना को भली-भाँति देखते रहें। सौ वर्षों तक जीवित रहें। सौ वर्षों तक सुनने की शक्ति रहे। सौ वर्षों तक अच्छी तरह बोलते रहें। उन सौ वर्षों तक दीनता रहित रहें। और सौ वर्षों से अधिक भी यह सब रहे।

गायत्री मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋग्वेद् 3.62.10, यजु. 36.3 ऋषि विश्वामित्र देवताः सविता

(ओ३म्) परमेश्वर (भूः) भूमि; प्राणों से भी प्यारा; जीवन दाता (भुवः) आकाश; दुःख हरने वाला (स्वः) धन; सुख देने वाला (तत्) उस (सवितुः) उत्पन्न करने वाले का (वरेण्यम्) वरण करने/अपनाने योग्य (भर्गः) शुद्ध/ज्ञानस्वरुप; झोलियाँ भरने वाले (देवस्य) देव/ईश्वर का (धीमहि) ध्यान करें। (धियः) बुद्धियों को (यः) जो (नः) हमारी (प्रचोदयात्) प्रेरित करे; शुभ कर्मों में लगाए।

समर्पण

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत् कृपयानेन जप-उपासना-आदि-कर्मणा
धर्म-अर्थ-काम-मोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिः भवेन्नः॥ पंच महायज्ञ विधि

(यह व्यक्तिगत प्रार्थना है। आप अपनी भाषा में भी कर सकते है) ।

हे प्रभु आपने हमें यह सुन्दर जीवन दिया है। इस जीवन में हम जो भी कर पाते हैं सभी आपकी कृपा का ही परिणाम है। धर्म, अर्थ और काम, सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिये हम जो भी आपकी कृपा से कर पा रहे हैं, सभी आपकी भक्ति का ही संबल है। आपके मार्ग पर चलते हुए हमारी अभिलाशा है कि अन्त में हम शीघ्र ही मोक्ष की प्राप्ति भी कर सकें ।

नमस्कार मन्त्र

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च

नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

यजु. १६.४१; ऋषि परमेष्ठी प्रजापति, देवा ऋषयः; देवता रुद्र

सुख स्वरूप प्रभु को नमस्कार है । सुख दाता प्रभु को नमस्कार है । कल्याण स्वरूप प्रभु को नमस्कार है। कल्याण करने वाले प्रभु को नमस्कार है । मंगल स्वरूप पभु को नमस्कार है। मंगल करने वाले मोक्ष दाता को बारम्बार नमस्कार है ॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

॥ इति सन्ध्योपासना विधिः ॥

पंच महायज्ञ

आर्य समाज पाँच महायज्ञों को मान्यता देता है।

1. ब्रह्म-यज्ञ या संध्या

यह भक्ति, ध्यान, समाधि के रूप में किया जाता है। योग साधना इसी का रूप है। इसके द्वारा व्यक्ति अपनी आत्मिक व शारीरिक शक्तियों को समृद्ध करता है।

2. देव-यज्ञ या हवन

यह सामाजिक उन्नति के लिए किया जाने वाला यज्ञ है। अग्नि जलाकर घी-सामग्री से हवन के द्वारा घर और आसपास के वातावरण की शुद्धि का जाती है। परोपकार करना, समाज के लिए कार्य करना और दान आदि के द्वारा सहयोग करना सभी इसी का रूप हैं।

3. पितृ-यज्ञ या श्राद्ध एवं तर्पण

अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि जीवित पारिवारिक पुरखों की, गुरुओं की यथासंभव सेवा करना पितृयज्ञ कहलाता है। जबतक वे जीवित हैं, श्रद्धा से सेवा करना (अहसान नहीं) श्राद्ध, और अच्छी-अच्छी, उनकी मनचाही वस्तुएँ उनको उपलब्ध कराकर तृप्त कर देना ही तर्पण कहलाता है।

4. बलिवैश्वदेव यज्ञ

निःसहाय जीव-जन्तु, गाय, कौआ, चिड़िया, कुत्ता, दीन-दुखी, भूखे असहायों को भोजन देना, सहायता करना बलिवैश्वदेव यज्ञ कहलाता है।

5. अतिथि यज्ञ

अतिथि को हमारी संस्कृति भगवान का रूप मानती है। संन्यासी, विद्वान, परोपकारी, उपदेशक, समाज-सुधारक जैसा कोई व्यक्ति जब बिना बतलाये दरवाज़े पर सहायता के लिए आ खड़ा हो, उसकी यथाशक्ति सहायता करना, आश्रय देना, सेवा करना अतिथि यज्ञ कहलाता है।

पाँचों यज्ञों का माहात्म्य बराबर है। यदि हवन करने का लाभ सबसे अधिक दिखाई देता है तो पितृयज्ञ एवं अतिथियज्ञ का महत्व भी उतना ही है।

संगीत सन्ध्या

Sangeet Sandhya

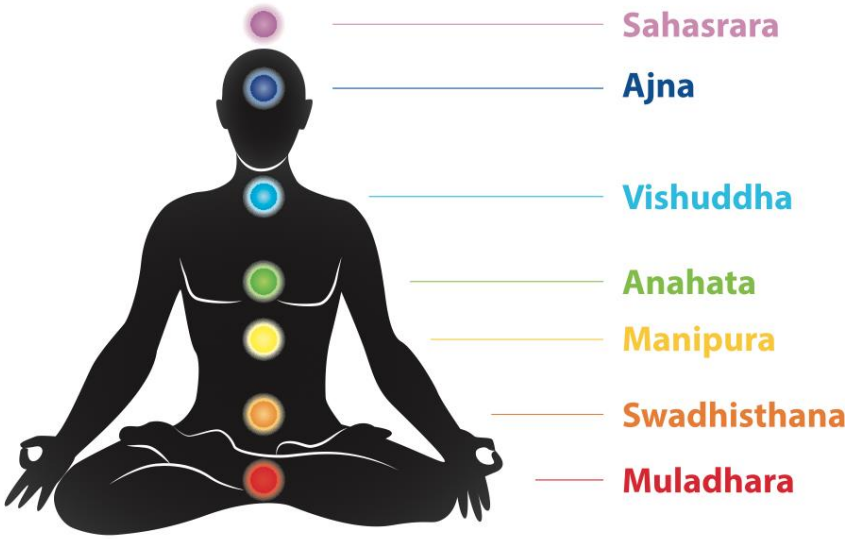

गीतकार महाकवि शान्त

ध्यानम् निर्विषयम् मनः

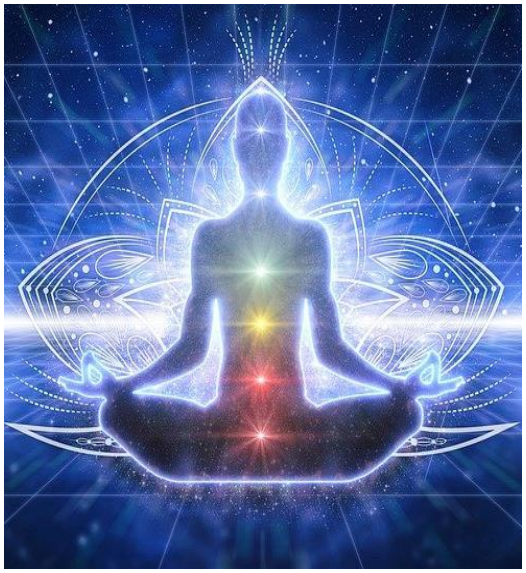

Being in "just-state" is called meditation.
Meditation is, mind, without thoughts.
Meditation is consciousness without any striving.

संगीत संध्या

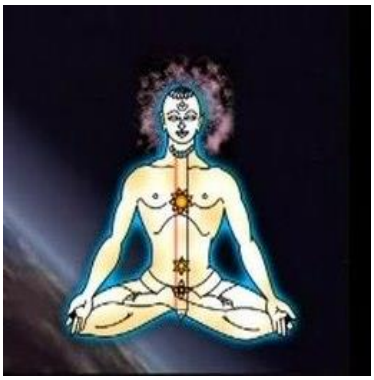

यह किसी बहुत पुराने कवि "शान्त" की रचना है ।

आजादी से पूर्व लाहौर आर्य समाज की ।

नीचे ज्यो की त्यो, पुरानी मिली, कवर फोटो है ।

इसे उपलब्ध कराने का श्रेय श्री करतार सिंह यादव,

चंबा (हिमाचल)को जाता है।

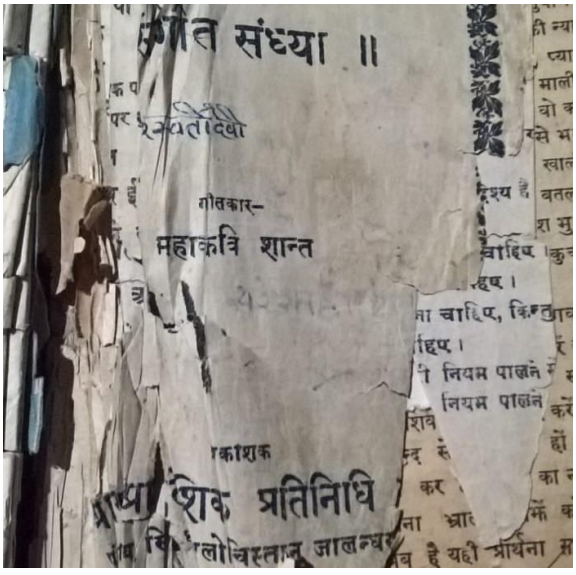

आचमन मंत्र जल पान

अनादि है तू और नहीं अन्त तेरा,
हे घट-घट के वासी निराकार ईश्वर।
तू है नाथ आनन्द का देने वाला,
तेरी जोत का हर जगह है उजाला।
हमें परम आनन्द जीवन में देकर,
करो सुख की वर्षा लगातार ईश्वर।।

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र अंग स्पर्श

मधुर गीत तेरे जुबा मेरी गाये,
तेरा नाम लेकर हर एक साँस आये।
चलायें मुझे सत्य मार्ग पे आंखें
मैं सुनता रहुँ तेरी मल्हार ईश्वर ।
न मल हो जरा मेरी नाभि के अन्दर,
हो हृदय मेरा शुद्ध विचारों का मन्दिर।
मेरे कंठ के स्वर हो इतने मनोहर,
कि हर सुर में भर दूँ तेरा प्यार ईश्वर।
भुजाओं में बल दो हे प्रीतम हमारे,
मेरे हाथ से काम हों नेक सारे।
करो शुद्ध हे नाथ हर अंग मेरा,
हो जीवन मेरा यश का भंडार ईश्वर।

मार्जन मन्त्र अंग स्पर्श

मति मेरी निर्मल रहे ज़िन्दगी भर,
सुनहरा रहे मेरा संसार प्रीतम।
तेरी जोत देखें सदा नैन मन के,
बसो मेरे स्वर में प्रभु ओ३म् बन के।
हो उजला सा हृदय में ऐसा उजाला,
कि उजली हो नाभि की हर तार ईश्वर।
मैं पग-पग पे चिन्तन करूँ नाथ तेरा,
झुके तेरे सम्मुख सदा शीश मेरा।
तेरी याद में मेरे अनुभव को दुनिया,
सुने शब्द अनहद की गुंजार प्रीतम।

प्राणायाम मन्त्र स्वास क्रिया

तू है प्राण दाता जगत प्राण प्यारे,
तू ही कष्ट हरता है भक्तों के सारे।
समाकर तू दुनिया में सुख-रूप भगवन्,
चलाये इसे अपने अनुसार प्रीतम।
नहीं तेरी सीमा जगत रचने वाले,
तू ही प्राण दुष्टों के पल में निकाले।
तू सत है, सदा है, अजर है, अमर है
न पाया किसी ने तेरा पार प्रीतम।

अघमर्षण मन्त्र

पाप मसलना

बसा के तू अपने में संसार सारा,
बना तू ही संसार का प्राण भगवन।
प्रलय में जो हर बार आती है दुनिया,
जवां होके हर बार आती है दुनिया।
न कम न ज्यादा कभी होने पाया,
तेरा ज्ञान सबके जिगर जान भगवन।
ये चाँद और सूरज समुद्र और तारे,
यहाँ रात के काले परदों से सारे।
निकलते हैं फिर ऐसे पहले थे जैसे,
पशु पक्षी पाखेरू इंसान भगवन।
वही तीन युग, तीन लोक और दिशाएँ,
वही वेद की प्यारी-प्यारी ऋचाएँ।
सुनाता है तू और सुनाता रहेगा,
यही गीत दुनिया को हर बार भगवन।
तू ही पाप पुण्य देखता है हमारे,
हमें जन्म देता है जिनके सहारे।
बसा कर ये दुनिया समाकर इसी में,
कहाता तू दुनियां का रथवान भगवन।
सगुण है तू निर्गुण है परमात्मा है,
कि हर आत्मा की तू ही आत्मा है।
अनादि है परिवार संसार तेरा,
अनादि है तू और तेरा ज्ञान भगवन।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

मन का चक्र

1. समा कर तू पूरब में सूरज के अन्दर,
करे दूर संसार का सब अंधेरा।
हे बन्धन से आज़ाद रक्षक हमारे,
तेरे ज्ञान के बाण किरणें है सारे ।
अगर कोई भूले से हमको सताये,
हमें क्रोध उसपे भी आने न पाये।
करो दूर शत्रु के दिल से बुराई,
रहे नाथ हमपे ये उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

2. तू दक्षिण में ऐश्वर्य बन कर समाये,
तू ही दुष्ट जीवों से हमको बचाये।
समझते है जो तुझको तेरी दया से,
उन्हीं के जीवन से है जग में सवेरा।
हो अज्ञान के वश में अगर कोई भाई,
करे भूलकर हमसे कोई बुराई
हरो ईर्ष्या द्वेष हृदय से उसके,
रहे नाथ हमपे ये उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

3. तेरा राज्य पश्चिम में है अन्तरयामी,
बचाये तू दुःख देने वालों से स्वामी।
तू ही भक्त रक्षक है और दुष्ट नाशक,
तेरा ज़र्रे ज़र्रे में है नाथ डेरा।
कोई दिल जला मेरे दिल को जलाये,
या जीवन मेरा दिल किसी का दुखाये।
तू दोनों का हृदय से हृदय मिला दे,
रहे नाथ हमपे ये उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

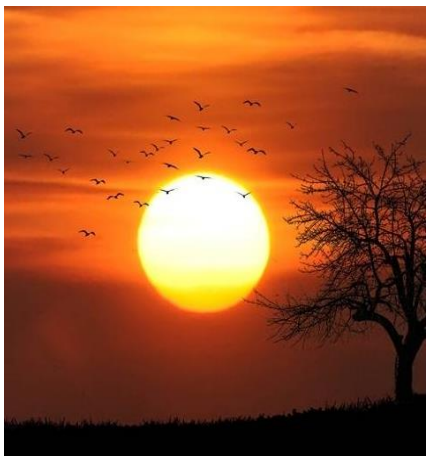

4. तू ही शांत उत्तर दिशा में समाकर,
बहाता आनन्द का एक सागर।
तू ही माली है फुलवारी दुनिया है तेरी,
तेरे हाथ में है सुखों का फरेरा ।
अगर दुश्मनी कोई करता है हमसे,
मगर हम न खेलें कभी उसके गम से।
रहें भाई बनकर यह संसार वाले,
रहे नाथ हमपे ये उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

5. **है पृथ्वी का हर ज़र्रा तेरा ही मन्दिर,**
छुपे हैं तेरे बाण वृक्षों के अन्दर
तू दुनिया की हर औषधी में बसा है,
कली की तली पे है तेरा बसेरा।
बुरे के भी दिल में न आये बुराई,
भले सब हो प्राणी करें सब भलाई
सिखाओ प्रभु प्रीत की रीत हमको,
रहे नाथ हमपे यह उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

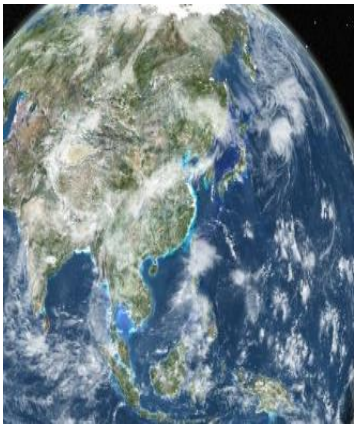

6. **जो आकाश पे आएँ काली घटायें,**
बरस कर जो दुनिया को अमृत पिलाये।
यही तेरी हम पर दया है दयालु,
हो दुनिया का अमृत भरा हर सवेरा।
हों संसार वाले प्रभु मीत मेरे,
मैं शत्रु को अर्पण करूँ नाथ तेरे।
करो शुद्ध भगवान दुनिया के दिल को,
रहे नाथ हमपे ये उपकार तेरा।
तुझे तेरे गुण तेरे बाणों के भगवन,
नमस्कार मेरा नमस्कार मेरा।

उपस्थान मन्त्र

समीप बैठना

हे देवों के देव हे जगत के उजाले,
परे है अंधेरे से ज्योति तुम्हारी।
तू है ज्ञान का चाँद सत ओर चित है,
चराचर के अन्दर तेरी जोत नित है।
तू ही जगत रक्षक है आनन्द दाता,
तेरी शरण आए हैं तेरे पुजारी।
तू वेदों का कर्ता है नित रहने वाले,
तुझे जातवेद: कहें कहने वाले।
तू पहचाना जाता है रचना से अपनी,
तू ही हर अणु में है कल्याणकारी।
है सूर्य की किरणों से वृक्षों का जीवन्,
मगर तेरी किरणें है किरणों में भगवन।
परे द्वेष से है तू योगी के मन में,
तू ही नाथ करता है रक्षा हमारी।

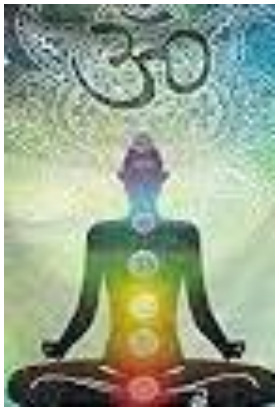

सौ वर्ष की कामना

नज़र बनके तू ही नज़र में समाये,
तू ही सबका भगवन हितैषी कहाये।
तू पहले था शुद्ध अब भी है और रहेगा,
तेरे आसरे नाथ सृष्टि है सारी।
जिएँ सौ बरस तक तुझे ही निहारें,
पुकारें तेरा नाम हृदय की तारें।
हो बन्धन से आज़ाद जीवन हमारा,
पड़े कान में नाथ वाणी तुम्हारी।
अगर सौ बरस से अधिक जीयें भगवन,
चित्त वाणी मन में हो तेरा ही चिन्तन।
नज़र ऐसी दे कि नज़र मुझको आए,
तेरी जोत हर ज़र्रे में प्यारी प्यारी।
तू ही प्राण दाता है प्राणों से प्यारे,
तू ही दूर करता है संताप सारे।
है ब्रह्माण्ड रथ और रथवान तू है
प्रभु मेरे ऐश्वर्य की खान तू है।

समर्पण समर्पित करना

तू हर आत्मा का उजाला है भगवन,
बनाए तुम्हीं ने हैं चाँद और तारे।
तू ही प्रेम पूजा के है योग्य ईश्वर,
तू ही ज्ञान अमृत का है शुद्ध सरोवर।
बसाऊँ तुझे प्यार से आत्मा में,
बनो सारथी मेरे भगवन हमारे।
करूँ मैं न जीवन मे कोई बुराई,
सुकर्मो के दाता करो ये भलाई।
मति मेरी इतनी हो शुद्ध ओर निर्मल,
कि मुझसे रहें दूर दुःख ताप सारे।

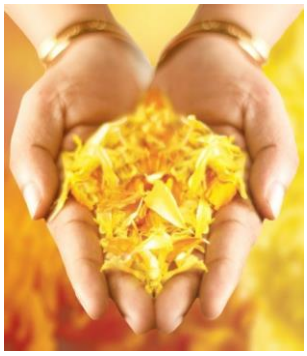

नमस्कार मन्त्र

शिव मन्त्र

नमस्कार सुख रूप जगदीश मेरे,
तू दाता है आनन्द का ईश मेरे।
नमस्कार तुझको है कल्याणकारी,
है भक्तों पे भगवन दया सब तुम्हारी ।
नमस्कार परमात्मन भोले-भाले,
नमस्कार हे मोक्ष के देने वाले।
नमस्कार नमस्कार भोले भंडारी,
नमस्कार नमस्कार दया हो तुम्हारी ।

Yajna-Havan / Dev-Yajna

यज्ञ हवन, देव-यज्ञ

यज्ञ हवन

सभी अवसरों पर करने योग्य

इस पुस्तिका में यज्ञ मन्त्रों का संकलन कुछ विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। स्वस्तिवाचन एवं शान्तिप्रकरण के मन्त्रों को अलग से नहीं लिया गया है बल्कि कुछ चुने हुए मन्त्रों को हवन मन्त्रों के साथ ही जोड़ दिया गया है। बहुत बार देखा गया है कि स्वस्तिवाचन एवं शान्तिप्रकरण के मन्त्रो को पाठ करने से सभी छोड़ देते हैं। कारण कोई भी रहता हो।

लेकिन हमने चुनकर कुछ मन्त्रों को हवन विधि में सम्मिलित कर लिया है, ताकि हवन करते समय उनका पाठ हो सके और आहुति भी दी जा सके ।

नोट:- हवनकुंडों का निर्माण बहुत प्रकार से किया जाता है,

हम प्रायः चतुष्कोण का ही प्रयोग करते हैं ।

यज्ञ-हवन के लिए कुछ सामान की आवश्यकता होती है, हमने नीचे उद्धृत किया है। कुछ सामान घर पर ही होगा और कुछ खरीदना पडेगा। भारतीय स्टोर से सभी कुछ मिल जाता है।

1. घी लगभग 500 मिलीग्राम
2. हवन सामग्री लगभग 200 ग्राम (जड़ी-बूटियों का मिश्रण)
3. कर्पूर लगभग 10 ग्राम (आग जलाने के लिये)
4. माचिस एक पैक
5. एक घी-पात्र
6. एक लंबा चम्मच
7. हवन-कुंड (विशेष रूप से बनाया गया, यज्ञ-पात्र)
8. एलूमोनियम रोल (हवन-कुंड के नीचे बिछाने के लिये)
9. चार छोटी कटोरी (आचमन का पानी रखने के लिये))
10. चार छोटे चम्मच, आचमन के लिये
11. एक लोटा या जग (पानी रखने के लिये)
12. चार छोटी प्लेट, सामग्री रखने के लिये
13. एक दिया, रूई-बाती के साथ
14. हाथ पोंछने के लिये छोटे टॉवल या नेपकिन
15. एक चिमटा (हवन की लकड़ियो को ठीक करने के लिये)
16. हवन-समिधा (आम, बरगद, पीपल, पलास की लकड़ियां उचित मानी गई हैं)

भक्त का समर्पण

हे विश्वदेव, सब के उत्पादक प्रभु ! आप हमसे सब बुराईयां दूर करके अच्छाईयां प्राप्त करने की शक्ति दें । आप हिरण्यगर्भ हैं। सभी कुछ देदीप्यमान सूर्य, चाँद, सितारे आपके ही भीतर समाये हुए हैं। आपने ही इन सबको धारण भी किया हुआ है। आप ही हमारी दोनों प्रकार की वैयक्तिक शक्ति; आत्मिक बल एवम् शारीरिक बल के देने वाले हैं। हम आपके आशीर्वाद का अमृत चाहते है। आपने ही प्राणिमात्र, दो पैर वाले या चार पैर वाले, सभी की रचना की है। आपने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना ही नहीं की बल्कि आप इसकी देख-रेख भी कर रहे हैं। सम्पूर्ण द्युलोक को आप नियमों में चलाते हैं। आप प्राणिमात्र ही नहीं अपितु विश्व में जो कुछ भी दिखायी देता है सबके रचयिता एवम् उसके नियामक है । हमें भी सांसारिक ऐश्वर्य का स्वामी बनने का सामर्थ्य दें । आप हमारे सच्चे बन्धु, हितैशी एवम् मित्र हैं । संसार में कुछ भी आपके लिए अनजान या छुपा नहीं । जिस रास्ते से ज्ञानवान लोग चलकर जीवन में सुख की प्राप्ति करते है। हमें भी उसी पथ का पथिक बनाएं । आप सच्ची अग्नि हैं। आगे आगे चलने की आपकी पूर्ण सामर्थ्य है, क्योंकि आप ज्ञानवान एवं प्रकाशवान हैं । कृपया हमें सही मार्ग से जीवन में आगे बढाएं । हम नम्रता-पूर्ण स्तुति, प्रार्थना, उपासना के साथ अपने आपको आपके समर्पण करते है ।

अग्निः अग्नि अग्रणीर्भवति । अग्रम् यज्ञेषु प्रणीयते । Yāskāchārya Nirukta 7.14

अग्नि को इसीलिए अग्नि कहते है कि यह सबसे आगे होती है। आगे आगे चलने वाली/वाले को अग्नि कहते हैं।
यज्ञ कर्मो में सबसे पहले इसी का आधान करते हैं, इसके बिना यज्ञ नहीं होता ।

गायत्री मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः ।
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

ऋग्वेद् 3.62.10, यजु. 36.3 ऋषि विश्वामित्र देवताः सविता

(ओ३म्) परमेश्वर (भूः) भूमि; प्राणों से भी प्यारा; जीवन दाता (भुवः) आकाश; दुःख हरने वाला (स्वः) धन; सुख देने वाला (तत्) उस (सवितुः) उत्पन्न करने वाले का (वरेण्यम्) वरण करने/अपनाने योग्य (भर्गः) शुद्ध/ज्ञानस्वरूप; झोलियाँ भरने वाले (देवस्य) देव/ईश्वर का (धीमहि) ध्यान करें । (धियः) बुद्धियों को (यः) जो (नः) हमारी (प्रचोदयात्) प्रेरित करे; शुभ कर्मों में लगाए ।

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम दुखियों के कष्ट हरता है तू ।

तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु मे तू हो रहा है विद्यमान ।

तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर ! हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥

इस मंत्र में प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमारी बुद्धियों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा करे। वह ईश्वर सर्वव्यापक है, तथा सब कुछ जानता है। मनन पूर्वक इस मन्त्र का जप करने से मन की चंचलता एवं गलत रास्ते पर चलने की इच्छा पर नियन्त्रण होता है।

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रम् तन्न आसुव॥१॥ यजुर्वेद 30.3 ऋषि नारायण, देवता सविता

हे विश्व के देवता, तुम जन्मदाता एवं पालक हो। हमारी सब बुराई, दुख-दर्द हमसे दूर करके हमें अच्छाईयां प्राप्त कराईये ।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीम् द्यामुतेमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

ऋग्वेद 10.121.1 ऋषि हिरण्यगर्भ प्रजापति, देवता कः

हे जगत के स्वामी, तुमने ही देदीप्यमान अनगिनत सूर्यों का निर्माण किया है। आप ब्रह्माण्ड के रचयिता है एवं इसके स्थापक है। हम आपकी बहुत नम्रता के साथ भक्ति करते हैं।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।

यस्य च्छाया अमृतम् यस्य मुत्युः

कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥ ऋग्वेद 10.121.2 ऋषि हिरण्यगर्भ प्रजापति, देवता कः

हे ईश्वर आप शारीरिक एवं आत्मिक बल के देने वाले हैं । सम्पूर्ण विश्व आपकी भक्ति करता है । आपकी कृपा सुखदायक तो कोप दुखदायक है। हम आपकी बहुत नम्रता के साथ भक्ति करते है।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद् राजा जगतो बभूव ।

य ईशे अस्य द्विपदश् चतुष्पदः

कस्मै देवाय हविषा विधेम॥४॥ ऋग्वेद 10.121.3 ऋषि हिरण्यगर्भ प्रजापति, देवता कः

हे ईश्वर आपने अपनी महिमा के बल पर दो पैर वाले एवं चार पैर वाले सभी प्राणियों की रचना की है। आप स्वयं ही इस विश्व के एकमात्र राजा हैं । हे सुखस्वरूप हम आपकी बहुत प्रकार से नम्रता पूर्वक भक्ति करते हैं ।

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढाः येन स्वः स्तभितम् येन नाकः ।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः

कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥ यजुर्वेद 32.6 ऋषि स्वयम्भु ब्रहम, देवता परमात्मा

हे ईश्वर ! आपने सम्पूर्ण द्यौलोक, पृथिवी एवम् अन्तरिक्ष लोक की रचना करके सबको विमान की तरह बिना किसी सहारे के आकाश में घुमाया है । हे सुखस्वरूप हम आपकी बहुत प्रकार से नम्रता पूर्वक भक्ति करते हैं ।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस् तन्नो अस्तु

वयम् स्याम पतयो रयीणाम्॥६॥ ऋग्वेद 10.121.10 ऋषि प्रजापति हिरण्यगर्भ देवता कः

हे प्रजापति, सब के रचयिता! विश्व के सभी पदार्थ आपकी ही रचना है। आपके अतिरिक्त कोई अन्य इसका रचयिता नहीं। आप अन्तर्यामी हैं, हमारे मन की कामनाओं को आप पूर्ण कीजिए, हमें ऐश्वर्य के स्वामी बनने की सामर्थ्य दें ।

ओ३म् स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।

यत्र देवा अमृतमानशानाः

तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥ यजुर्वेद 32.10 ऋषि स्वयम्भु ब्रहम, देवता परमात्मा

हे ईश्वर ! आप हमारे सच्चे बन्धु एवं मित्र हैं। आप विश्व विधाता एवं सबकुछ जानने वाले है। जहाँ पर देव लोग अमृत की प्राप्ति करके सुख भोगते है हमें भी उसी सुख के रास्ते पर ले चलिये ।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो

भूयिष्ठाम् ते नम उक्तिम् विधेम ॥८॥ यजुर्वेद 40.16 ऋषि दीर्घतमा, देवता आत्मा

हे अग्नि, प्रकाशमय, ज्ञानस्वरूप! आप अच्छी तरह उचित अनुचित को जानते हैं। संसार के श्रेष्ठ, विद्वान पुरुष जिस मार्ग को अपनाते हैं हमें भी उसी मार्ग से आगे ले चलिए । हम भक्ति पूर्वक बहुत प्रकार से नम्रता पूर्ण स्तुति, प्रार्थना, उपासना के साथ आत्म समर्पण करते हैं ।

॥ ओ३म् शान्तिः ॥

आचमन मन्त्र

अब आचमन की तैयारी करें

नीचे लिखे तीन मन्त्रों से तीन आचमन करें ।

सीधे हाथ की हथेली में जल लेकर एक एक मन्त्र का पाठ कर तीन बार जल पियें ।

जल इतना ही हो कि आपके हृदय तक पहुंचे । यदि इसका आध्यात्मिक अर्थ समझ न आता हो तो इतना ही समझ लीजिए कि इस जल से आपका कण्ठ खुलता है। (गला साफ़ होता है) तथा आलस्य दूर होता है। यह आचमन प्यास बुझाने के लिए नहीं बल्कि आपको सचेत बने रहने के लिए है ।

आध्यात्मिक अर्थ में इतना ही समझ लीजिए कि यह पानी नहीं है, बल्कि अमृत है और यह अमृत ही आपका ओढना है, यह अमृत ही आपका पहनना है और यह अमृत ही आपका सत्य, यश एवं श्री है ।

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ (अमृत: उपस्तरणम् असि) ।१ ।

हे अमृतमय, मुझे भी अमृत का वरदान दो । यही मेरा ओढना है ।

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ (अमृत: आपिधानम् असि) ।२ ।

हे अमर, अमृत ही मेरा अधार हो । यही मेरा बिछावना है ।

ओम् सत्यम् यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा ।३ । तैत्तिरीय आरण्यक 10.32-35

हे सत्यरूप, मेरा जीवन सत्य, यश एवं श्री से भरपूर हो ।

हाथ धो कर थोड़ा जल बाएं हाथ की हथेली में लेकर, आगे लिखे मन्त्रों से अङ्ग स्पर्श करें ।

पहले दाएं फिर बाएं ।

अङ्ग स्पर्श मन्त्र

ओम् वाङ् म आस्ये-अस्तु ॥ मुख (दोनों ओर) । १ ।

हे प्रभु मेरी वाणी में बोलने की शक्ति दो।

ओम् नसोर्मे प्राणो-अस्तु ॥ नासिका (दोनों ओर) । २।

हे प्रभु मेरी नासिका में प्राण शक्ति दो ।

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुर्-अस्तु ॥ आँखें (दोनों) । ३ ।

हे प्रभु मेरी आँखों में देखने की शक्ति दो ।

ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रम् अस्तु ॥ कान (दोनों) । ४ ।

हे प्रभु मेरे कानों में सुनने की शक्ति दो।

ओम् बाह्वोर्मे बलम् अस्तु ॥ दोनों भुजाएं । ५।

हे प्रभु मेरी बाहों में बल दो ।

ओम् ऊर्वोर्मे ओजो अस्तु ॥ दोनों घुटने । ६।

हे प्रभु मेरी जंघाओं में शक्ति दो।

ओम् अरिष्टानि मे अङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ । ७ । पारस्कर गृह्यसूत्र 2.3.25

हे प्रभु मेरे सभी अंगो में जीवन एवं सहन शक्ति दो । सभी अङ्ग

अब अपने हाथ धो कर पोंछ लें। अग्नि जलाकर यज्ञ की तैयारी कीजिए।

अग्नि आधान मन्त्र

अग्नि जलाने के लिये कपूर का प्रयोग करें

ओम् भूर्भुव स्वः । इस मन्त्र को बोलकर दीया/ज्योति जलाएं । १ ।

हे जीवन-आधार, सुखरूप, ज्योतिपुंज हमें भी ज्योति दिखाएं ।

गोभिल गृह्यसूत्र 1.1.11; शतपथ ब्राह्मण 3.21.6

(जब भी आप घर मन्दिर में दीया जलाएं इसी मन्त्र का पाठ करें)

ओम् भूर्भुवः स्वर् द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठे
अग्नि-मन्नाद-मन्ना-द्यायादधे ॥ । २। यजुर्वेद 3.5. ऋषि प्रजापति, देवता अग्नि, वायु, सूर्य

ओम् उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि
त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयम् च ।
अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्
विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ । ३। यजुर्वेद 15.54 ऋषि परमेष्ठि देवता अग्नि

इन मन्त्रों का पाठ करते हुए यज्ञकुण्ड में समिधाएं रखें। अग्नि को ठीक से प्रज्वलित करने के लिए घी ओर कपूर का प्रयोग करें।

मैं याजक, देवताओं की धरती पर उसकी नाभि को यज्ञकुंड बनाये, यज्ञकुंड की अग्नि का आधान करता हूँ । आपकी कृपा से यह अग्नि प्रचंड प्रज्वलित हो, यज्ञ सफल हो, जिससे हम इष्ट और आपूर्त, अपनी और समाज की उन्नति के कार्य प्रसन्नता से भली भाँति करते रहे। 2-3

अगले मन्त्रों से यजमान तीन समिधाएं एक एक करके स्वाहा के साथ अग्नि में चढाए । समिधाएं अनुमानतः आठ अंगुल लम्बी होती हैं।

(हम सिनमन/दालचीनी की डंडियों का प्रयोग करते हैं)

समिधा आधान मन्त्र

ओम् अयन्त इध्म आत्मा

जातवेदस्तेने-ध्यस्व वर्धस्व चेद् वर्धय आश्वलायन गृह्यसूत्र 1.10.12

चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।

इदम् अग्नये जातवेदसे इदम् न मम ॥ पहली समिधा । १ ।

हे प्रभु मैं यह यज्ञ हृदय-आत्मा से कर रहा हूँ। आपकी भक्ति की इस यज्ञाग्नि को और बढाए जा रहा हूँ । आप प्रसन्न होकर मुझ यजमान को इन सांसारिक वस्तुओं से समृद्ध कीजिए: सुन्दर सन्तान, पशुधन, आपकी भक्ति का तेज, अन्न एवं भोग करने की शक्ति । यह समिधा जातवेदस अग्नि के लिए है।

ओम् समिधाग्निम् दुवस्यत घृतैर् बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन॥

ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतम् तीव्रम् जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा । यजुर्वेद 3.1, 2 ऋषि आंगिरस, सुश्रुत देवता अग्नि
इदम् अग्नये जातवेदसे इदम् न मम ॥ दूसरी समिधा । २ ।

इस यज्ञ अग्नि को मैं समिधाओं और प्रज्वलित करने वाले घृत की आहुतियों से सींचता हूँ। यह अग्नि शुद्ध, धूम्र रहित हो तीव्रता से जले।

ओम् तन्त्वा समिद्भि-रङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा । यजुर्वेद 3.3 ऋषि भारद्वाज देवता अग्नि
इदम् अग्नये अङ्गिरसे इदम् न मम ॥ तीसरी समिधा । ३ ।

मैं इसी यज्ञ अग्नि को और समिधाओं से, और घृत से प्रचंड रूप से बढ़ाता हूँ। यह अग्नि प्रकाश करती है, पदार्थों को शुद्ध करती है और उनका भेदन करके वायुमंडल में प्रवेश कराती है।

अगले मन्त्र से **पाँच बार** पाठ करके घी की पाँच आहुति दें

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेने-ध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।
इदम् अग्नये जातवेदसे इदम् न मम ।१ ।

इस मन्त्र में पाँच वस्तुओं की प्रार्थना की गयी है। एक-एक वस्तु के लिए एक-एक आहुति दी गयी है। पाँच आहुति देने तक समिधाएं ठीक से अग्नि भी पकड़ जाएंगी ताकि सामग्री की अहुति देने पर धुआं न करें ।

आश्वलायन गृह्यसूत्र 1.10.12

हे प्रभु मैं यह यज्ञ हृदय-आत्मा से कर रहा हूँ। आपकी भक्ति की इस यज्ञाग्नि को और बढाए जा रहा हूँ । आप प्रसन्न होकर मुझ यजमान को इन सांसारिक वस्तुओं से समृद्ध कीजिए: सुन्दर सन्तान, पशुधन, आपकी भक्ति का तेज, अन्न एवं भोग करने की शक्ति । यह आहुति जातवेदस अग्नि के लिए है।

जल सिंचन/प्रोक्षण

ओम् अदिते अनुमन्यस्व । (पूर्व दिशा) ।१ ।

ओम् अनुमते अनुमन्यस्व । (पश्चिचम दिशा) ।२।

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व । (उत्तर दिशा) ।३ ।

गोभिल गृह्यसूत्र 1.3.1-3 छान्दोग्य ब्राह्मण 1.1

हे अदिति, अविनाशी प्रभु, मुझे विश्वास दे। हे सबके अनुमति दाता मुझे भी मेरे कार्यों में अपनी अनुमति का साहस दें। हे सारस्वत, ज्ञानरूप प्रभो, मुझे भी ज्ञान का आत्मविश्वास दें।

ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञम् प्रसुव यज्ञपतिम् भगाय ।
दि्व्यो गन्धर्वः केतपूः केतम् नः पुनातु यजुर्वेद 30.1 ऋषि नारायण, देवता सविता
वाचस्पतिर् वाचम् नः स्वदतु ॥ (चारों दिशाओं में) ।४।

हे देव सविता, इस यज्ञ का प्रारंभ किया गया है, आप इसके स्वामी बनकर हमें ऐश्वर्यवान कीजिए। आप दिव्य गुणों से युक्त हैं, हमें भी दिव्य गुणवान और मधुर वाणी से युक्त कीजिए।

चार आज्य आहुति घी की (प्रथम भाग)

ओम् अग्नये स्वाहा |
इदम् अग्नये इदम् न मम ॥ । १ । उत्तर दिशा में

यजुर्वेद 22.27 ऋषि प्रजापति, देवता अग्नि, सोम

यह आहुति अग्नि के लिए है।

ओम् सोमाय स्वाहा ।
इदम् सोमाय इदम् न मम ॥ । २ । दक्षिण दिशा में

यजुर्वेद 22.32 ऋषि प्रजापति, देवता अग्नि, सोम

यह आहुति सोम के लिए है।

ओम् प्रजापतये स्वाहा ।
इदम् प्रजापतये इदम् न मम ॥ । ३। मध्य में

यजुर्वेद 22.32 ऋषि प्रजापतिः देवता प्रजापति

यह आहुति प्रजापति के लिये है।

ओम् इन्द्राय स्वाहा ।
इदम् इन्द्राय इदम् न मम् ॥ । ४ । मध्य में

यजुर्वेद 22.27, ऋषि प्रजापति, देवता इन्द्र

यह आहुति इन्द्र के लिए है।

चार आज्य आहुति

घी की (द्वितीय भाग)

ऋग्वेद 9.66.19
ऋषि शतम् वैखानसा देवता अग्नि

ओम् भूर्भुव स्वः । अग्न आयूँषि पवस आ सुवोर्जमिषम् च नः ।

आरे बाधस्व दुच्छुनाम् स्वाहा ।

इदम् अग्नये पवमानाय इदम् न मम ॥ 1

हे अग्निरूप प्रभो जीवन की पवित्रता, सुख-समृद्धि के लिए मैं यज्ञ कर रहा हूँ।
आप हमारे दुर्गुणों दुर्विचारों को दूर कीजिये।

ओम् भूर्भुव स्वः । अग्निर् ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।

तमीमहे महागयम् स्वाहा ।

ऋग्वेद 9.66.20
ऋषि शतम् वैखानसा देवता अग्नि

इदम् अग्नये पवमानाय इदम् न मम ॥ 2

हे ज्ञानमय प्रभु, आप ऋषि हैं, आप सभी कुछ जानते हैं। इस पंचभूत जगत के भी आप पहले हैं। सभी के हितकारी प्रभु हम आपकी उन्हीं महानताओं का गायन करते हुए यज्ञ करते है।

ओम् भूर्भुव स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।

दधद् रयिम् मयि पोषम् स्वाहा ।

ऋग्वेद 9.66.21
ऋषि शतम् वैखानसा
देवता अग्नि

इदम् अग्नये पवमानाय इदम् न मम ॥ 3

हे अग्निरूप प्रभु, आप हमें उत्तम कार्यों में लगायें, हम तेजस्वी एवं पराक्रमी हों।
हमें धन, सुख एवं समृद्धि से संपन्न कीजिए ।

ओम् भूर्भुव स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुमस् तन्नो अस्तु

वयम् स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा ।

ऋग्वेद 10.121.10
ऋषि प्रजापति हिरण्यगर्भ
देवता कः

इदम् प्रजापतये इदम् न मम ॥ 4

हे प्रजापति, पालन हारे स्वामी, आपसे भिन्न कोई और इस जगत का पालने वाला नहीं | हम भी अपनी-अपनी मनोकामनायें लेकर यज्ञ करते हैं। जो-जो भी हमारी इच्छायें हैं आप उन्हें पूरा कर, हमें धन-ऐश्वर्यों के स्वामी बनायें।

प्रातःकालीन यज्ञ

सामग्री एवं घी की आहुति दें

यजुर्वेद 3.9 ऋषि प्रजापति देवता सूर्य (मंत्र 1-3)

ओम् सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ ।१ ।

ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा ॥ ।२ ।

ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ।३ ।

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ 4 यजुर्वेद 3.10 ऋषि प्रजापति देवता सूर्य

यह सूर्य ही संसार की ज्योति है, सूर्यरूप ज्योति ही जीवन है। सूर्य का प्रकाश ही जीवन का तेज है। सृजनहार परमेश्वर ने ही सूर्य और उषा को भी उत्पन्न किया है। हमारा यह उषाकाल का हवन सूर्य की किरणों के साथ समस्त वातावरण में फैल जाये।

सायंकालीन यज्ञ

यजुर्वेद 3.9 ऋषि प्रजापति देवता अग्नि (मंत्र 1-3)

ओम् अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिर् अग्निः स्वाहा ॥ ।१ ।

ओम् अग्निर् वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा ॥ ।२ ।

ओम् अग्निर् ज्योतिर् ज्योतिर् अग्निः स्वाहा ॥ मन में बोलें **।३।**

ओम् सजूर् देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या ।
जुषाणो अग्निर् वेतु स्वाहा ॥ 4 यजुर्वेद 3.10 ऋषि प्रजापति देवता अग्नि

अग्नि ही संसार की ज्योति है, अग्निरूप ज्योति ही जीवन है। अग्नि का प्रकाश ही जीवन का तेज है। सृजनहार परमेश्वर ने ही इस इन्द्र रूपधारी रात्रि का निर्माण किया है। यह रात्रिकाल का हवन अग्नि की लपटों के साथ समस्त वातावरण में फैल जाये।

(सायंकाल में सूर्य की किरणें नहीं, इसीलिए अग्नि को ही सूर्य का रूप मानकर हवन किया जाता है, अग्नि या प्रकाश सूर्य के कारण ही है)

दैनिक यज्ञ (प्रातः सायं) सामग्री एवं घी की आहुति दें

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।
इदम् अग्नये प्राणाय इदम् न मम ॥ 1 तैत्तिरीय आरण्यक 10, 2

पृथ्वी की प्राणवायु की शुद्धि के लिये यह आहुति है।

ओम् भुवर् वायवे अपानाय स्वाहा ।
इदम् वायवे अपानाय इदम् न मम् ॥ 2 तैत्तिरीय आरण्यक 10, 2

अन्तरिक्ष में विचरण करने वाली अपानवायु की शुद्धि के लिये यह आहुति है।

ओम् स्वर् आदित्याय व्यानाय स्वाहा ।
इदम् आदित्याय व्यानाय इदम् न मम् ॥ 3 तैत्तिरीय आरण्यक 10,2

द्युलोक में स्थित सूर्य की किरणों एवं व्यान वायु की शुद्धि के लिये यह आहुति है।

ओम् भूर्भुवः स्वर् अग्नि-वाय्वादित्येभ्यः
प्राणापान-व्यानेभ्यः स्वाहा ।
इदम् अग्नि-वाय्वादित्येभ्यः
प्राणापान-व्यानेभ्य इदन्न मम ॥ 4 तैत्तिरीय आरण्यक 10,2

मैं यह आहुति, पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक; अग्नि, वायु, आदित्य; प्राण, अपान, व्यान इन सभी की शुद्धि के लिये देता हूँ।

ओम् आपो ज्योती रसो अमृतम्
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा ॥ 5 तैत्तिरीय आरण्यक 10.15

हे प्रभु आप, शुद्ध, परम ज्योति, रसमय अमृत एवं ब्रह्म हैं। आपके भू: भुवः एवं स्व: स्वरूप को मेरी यह आहुति समर्पित है।

ओम् याम् मेधाम् देवगणाः पितरश्च-उपासते ।
तया माम् अद्य मेधया अग्ने
मेधाविनम् कुरु स्वाहा ॥ 6 यजुर्वेद 32.14 ऋषि मेधाकाम देवता परमात्मा

हे परमात्मा, जिस मेधाबुद्धि की उपासना-कामना देव-विद्वान गण और हमारे पितर-पूर्वज करते आये हैं, मैं भी उसी मेधाबुद्धि की कामना आज करता हूँ।

ओम् विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रम् तन्न आसुव स्वाहा ॥ 7 यजुर्वेद 30.3 ऋषि नारायण, देवता सविता

हे विश्व के सविता देव, सभी दुख, बुराइयों से हमें दूर रखें और जो कुछ भद्र और अच्छाइयाँ हैं वह हमें प्राप्त कराइये।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठाम् ते
नम उक्तिम् विधेम स्वाहा ॥ 8 यजुर्वेद 40.16 ऋषि दीर्घतमा, देवता आत्मा

हे ज्ञानवान भगवन, आप सभी कर्म-मार्गों के जानने वाले हैं, हमें अच्छी राहों से आगे ले चलिए। हममें जो भी कुटिलतायुक्त, पापकर्म हैं उन्हें दूर कर दीजिए, इसीलिये हम बहुत प्रकार से विनम्रतापूर्वक आपकी भक्ति कर अपने आपको, आपके समर्पण करते हैं।

ओम् भूर्भुवः स्वः ।
तत् सवितुर् वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ॥ 9 ऋग्वद ३.६२.१० यज॰ ३६.३ ऋषि विश्वामित्र देवताः सविता

(ओ३म्) परमेश्वर (भूः) भूमि; प्राणों से भी प्यारा; जीवन दाता (भुवः) आकाश; दुःख हरने वाला (स्वः) धन; सुख देने वाला (तत्) उस (सवितुः) उत्पन्न करने वाले का (वरेण्यम्) वरण करने/अपनाने योग्य (भर्गः) शुद्ध/ज्ञानस्वरूप; झोलियाँ भरने वाले (देवस्य) देव/ईश्वर का (धीमहि) ध्यान करें । (धियः) बुद्धियों को (यः) जो (नः) हमारी (प्रचोदयात्) प्रेरित करे; शुभ कर्मों में लगाए ।

मंगलकारक मन्त्र-आहुति सामग्री एवं घी की अहुति दें

ओम् ऋतञ्च सत्यम् चाभीद्धात् तपसो अध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः स्वाहा ॥ ऋग्वेद 10.190.1 **1**
ऋषि अघमर्षण मधुच्छन्दस देवता भाववृतम

ओम् समुद्राद् अर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहो रात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी स्वाहा ॥ ऋग्वेद 10.190.2 **2**
ऋषि अघमर्षण माधुच्छन्दस देवता भाववृतम

ओम् सूर्या - चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वम् अकल्पयत् ।
दिवम् च पृथिवीम् चान्तरिक्षम् अथो स्वः स्वाहा ॥ ऋगवेद 10.19 3 **3**
ऋषि अघमर्षण माधुच्छन्दस देवता भाववृत्तम

प्रभु के तप से ऋत व सत्य की उत्पत्ति हुई। (प्रकृति संबन्धित नियम ऋत और जीव विषयक नियम सत्य)। इन्हीं ऋत व सत्य के आधार पर तमस् पूर्ण प्रकृति सृष्टि के रूप में साकार हुई। मानो रात्रि के समुद्र को मथकर ही सृष्टि के दिन का निर्माण किया है। इसी रात-दिन के साथ काल और संवत्सर का निर्माण कर समय का निर्धारण किया है। द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी लोक, सूर्य, चन्द्रमा आदि तारे; दिन, रात, क्षण, मुहूर्त, बादल, समुद्र आदि सबकुछ पहले के समान ही अब भी बनाए हैं। (mantra 1-3)

ओम् स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु स्वाहा ॥ यजुर्वेद 25.19 **4** ऋषि गौतम, देवता इन्द्र

वह ईश्वर, जो सबका स्वामी है, यशस्वी है, सबका पोषक और समस्त ज्ञान वाला है, जो महान और संसार सागर से पार उतारने वाला है हमारा कल्याण करे।

ओम् भद्रम् कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः
भद्रम् पश्येम-अक्षभिर् यजत्राः ।
स्थिरैर् अंगैस्-तुष्टुवांसस्-तनूभिर्-व्यशेमहिर्
देवहितम् यदायुः स्वाहा ॥ यजुर्वेद 25.21.5 **5** ऋषि गौतम, देवता विद्वांसः

हे सर्वज्ञ भगवन, हमें कानों से भद्र ही सुनने को मिले, हे यज्ञों के विधाता, हम अपनी आँखों से भद्र ही देखें, हे शक्तिशाली परमेश्वर, हम भी सुदृढ़, रोगरहित, सुन्दर शरीर को पाकर पूर्ण आयु को प्राप्त करें ।

ओम् शन्नो वातः पवताम् शन्नः तपतुः सूर्यः ।
शन्नः कनिक्रदद् देवः ऋषि दध्यंग, अथर्वा देवता वात, सूर्य
पर्जन्यो अभिवर्षतु स्वाहा ॥ यजुर्वेद 36.10 **6**

हे यज्ञ के देवता, हमारे लिये वायु शुद्ध व शान्ति दायक होकर बहे, सूर्य जीवनदायी किरणों के साथ तपे, गरजता हुआ मेघ कल्याणकारी वर्षा को बरसाये।

ओम् अभयम् मित्रात् अभयम् अमित्रात् अभयम् ज्ञातात् अभयम् परोक्षात् ।
अभयम् नक्तम् अभयम् दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रम् भवन्तु स्वाहा ॥ अथर्ववेद 19.15.6 **7** देवता इन्द्र

हे इन्द्र, आप हमें अभय दान दें। हमें किसी मित्र से किसी प्रकार का भय न हो, जो हमारा मित्र नहीं उससे भी हमें कोई भय न हो। जो हमें जानते हैं या जिनको हम जानते हैं और जिनको हम नहीं भी जानते हैं उनसे भी हमें कोई भय न हो। चाहें दिन हो या रात, हमें हर समय में अभयता दें। सारी दिशायें हमारे लिये अभय हों और चारों ओर मित्र ही मित्र हों।

ओम् यथा अहान्यनुपूर्वम् भवन्ति
यथर्तवः ऋतुभिर् यन्ति क्लृप्ताः ।
यथा न पूर्वम् अपरो जहात्येवा ऋषि संकुसुको यामायन देवता धाता
धातरायूंषि कल्पयैषाम् स्वाहा॥ **8** ऋग्वेद 10.18.5 अथर्ववेद 12.2.25

हे सबके जीवन धारण ईश्वर, जैसे दिन एक के बाद एक आता है (सोमवार के बाद एकदम शनिवार नहीं आता), जैसे ऋतुएँ अपना क्रम नहीं तोड़तीं, जैसे पहले वाला अपने पिछले को नहीं छोड़ता, इसी तरह हे भगवन आप हमारा जीवन दीर्घ आयु के साथ बढ़ायें । (कोई अकाल मृत्यु वाला न हो)।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति देवम्
तदु सप्तस्य तथेवैति।
दुरङ्गमम् ज्योतिषाम् ज्योतिरेकम्
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु स्वाहा ॥ ९।

यजुर्वेद 34.1,
ऋषि शिवसंकल्प देवता मन

यह जो मेरा मन है मुझे हमेशा दूर दूर ले जाता है। मन की विचार शक्ति अनन्त है । मेरे सोने पर भी यह मन मुझे घुमाता रहता है। प्रभु आप मेरे मन की विचारशक्ति को जानते हैं । मै आपकी भक्ति सहित प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे मन को सही विचारशक्ति दें ।

यह महामृत्युन्जय मन्त्र के नाम से भी जाना जाता है।

सायणाचार्यः त्रयाणाम् (ब्रह्म-विष्णु-रुद्राणाम्) अम्बकम् पितरम् यजामहे इति ।
हम सुगन्धि और पुष्टि वर्धक "त्र्यम्बक" (ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पिता) की पूजा करते है।
रुद्रदेव! बदरी फल की तरह हमें मुत्यु बन्धन से मुक्त करो और अमृत से मत मुक्त करो । ऋग्वेद 7.59.12

ओम् त्र्यंबकम् यजामहे
सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात्
मृत्योर्मुक्षीय मा अमृतात् ॥ ।१०।

ऋग्. 7.59.12

मैत्रावरुणि, वसिष्ठ ऋषि ।
रुद्रः देवता । अनुष्टुप छन्द ।

प्रभु आप सबके रक्षक हैं। आप सब जगह विद्यमान एवं भूत-भविष्य-वर्तमान सब-कुछ जानने वाले हैं। आपने सुगन्धित, स्वास्थ्य-वर्धक हवा को बहाया है । जिस प्रकार एक पका फल स्वयं ही टहनी से अलग हो जाता है; हमें भी सांसारिक बन्धनों से अलग होने की शक्ति एवं अमृत सुख प्राप्ति की कामना दे ।

ओम् तत् चक्षुर् देवहितम् पुरस्तात् शुक्रम् उच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतम् जीवेमः शरदः शतम्
श्रृणुयामः शरदः शतम् प्रब्रवामः शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतम्
भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा ॥ ।११।

यजुर्वेद 36.24
ऋषि दध्यंग अथर्व
देवता सूर्य

हे प्रभु आप सम्पूर्ण विश्व की आँख हैं। आप हमारा भला-बुरा पहले से ही जानते है। आप हमेशा विद्यमान हैं। हम आपकी भक्ति करते हैं। हमें सौ शरद ऋतुओं तक अपनी आंखों से देखने की शक्ति दीजिए । हमें सौ शरद ऋतुओं तक जीवित रहने की शक्ति दीजिए । हममें सौ शरद ऋतुओं तक सुनने की शक्ति रहे । हमें सौ शरद ऋतुओं तक बोलने की शक्ति दें । हमें सौ शरद ऋतुओं तक स्वतन्त्रता के साथ जीने की शक्ति दें । हम इस संसार में सौ शरद ऋतुओं से भी अधिक क्रियात्मक शरीर के साथ जीने की इच्छा रखें ।

पूर्णाहुति प्रकरण

निम्न मन्त्रों से घी की आहुति दें

ओम् भूरग्नये स्वाहा ।
इदम् अग्नये इदम् न मम ॥ ।१ ।

हे ईश्वर आप जीवन दाता एवं इसकी शक्ति हैं। यह आहुति अग्निदेव के लिए है ।

ओम् भुवर् वायवे स्वाहा ।
इदम् वायवे इदम् न मम ॥ ।२ ।

हे ईश्वर आप दुख-विनाशक हैं। यह आहुति जीवनदायी वायुदेव के लिए है।

ओम् स्वर् आदित्याय स्वाहा ।
इदम् आदित्याय इदम् न मम ॥ ।३।

हे ईश्वर आप सुखस्वरूप हैं । यह आहुति सुखदायक आदित्यदेव के लिए है ।

ओम् भूर्भुवः स्वर् अग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।
इदम् अग्नि-वाय्वादित्येभ्यः इदम् न मम ॥ ।४।

हे ईश्वर आप जीवनदायक, दुख-विनाशक एवं सुख-स्वरूप हैं। आपके त्रि-रूप को मैं यह आहुति समर्पित करता हूँ । यह आहुति अग्नि-वायु-आदित्य के लिए है ।

इसे प्रायश्चित आहुति के नाम से भी जाना जाता है।

स्विष्ट- कृत्- आहुति

अपनी रसोई में पकाए केवल मीठे पकवान की ही आहुति दें (या घी)

(नमकीन, खट्टा, तीखा या मिर्च वाला हवन में डालना मना है)

ओम् यदस्य कर्मणो-अत्यरीरिचम् यद्वा न्यूनम्-इहाकरम् ।
अग्निष्टत् स्विष्टकृत् विद्यात् सर्वम् स्विष्टम् सुहुतम् करोतु मे ।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुत-हुते सर्व-प्रायश्चित्त-आहुतिनाम्
कामानाम् समर्धयित्रे सर्वान् नः कामान्त्-समर्धय स्वाहा ।
इदम् अग्नये स्विष्टकृते इदम् न मम ॥ आश्वलायन गृह्यसूत्र 1.10.22 ।५।

हे ज्ञानरूप ! हमने यह यज्ञ श्रद्धा सहित सम्पन्न किया है। अगर हमसे भूल-चूक में कोई कमी या अति हो गयी हो, आप ज्ञानवान हैं कृपा करके यज्ञ को पूर्ण मानकर स्वीकार करें । आप हमारे हृदय की कामनाओं को जानते हैं। आप उन्हें पूरा करें । मैं यह प्रायश्चित्त आहुति प्रकाशमान, ज्ञानस्वरूप, शुभ-कर्मों के प्रेरक, कामनाओं के पूरक भगवान के लिए दे रहा हूँ ।

प्रजापति-आहुति

केवल घी की आहुति

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।
इदम् प्रजापतये इदम् न मम ॥ मन में बोलकर घी की आहुति दें । ६ ।

आप प्रजापति हैं सम्पूर्ण सृष्टि के रचयिता हैं; हमारी वाणी आपका वर्णन करने में असमर्थ है। यह आहुति आपके लिए है ।

निम्न मन्त्रों से सामग्री एवं घी की पूर्णाहुति दें

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय पूर्णम् एव अवशिष्यते ॥ बृहदारण्यक उपनिषद् 5.1 । ७ ।

आप पूर्णमय हैं । यह सृष्टि पूर्ण है । यह सम्पूर्ण विश्व पूर्ण ब्रह्म से ही बना है ।
सम्पूर्ण सृष्टि पूर्ण ब्रह्म से ही ली गयी है। पूर्ण ब्रह्म फिर भी पूर्ण ब्रह्म ही शेष रह गया है।

ओ३म् सर्वम् वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥ । ८ ।

हे पूर्ण-रूप आपकी कृपा से मैं यह यज्ञ पूर्ण कर रहा हूँ ।

ओ३म् सर्वम् वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥ । ९ ।

हे पूर्ण-ब्रह्म मैंने यह पवित्र यज्ञ पूर्ण कर दिया है ।

ओ३म् सर्वम् वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥ । १० ।

हे पूर्णमय ! मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि मैंने यह पवित्र यज्ञ पूर्ण कर दिया है ।

यज्ञ रूप प्रभु

यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए ॥
वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मगन सारे शोक सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की ॥
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए ॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो ।
इदन्न मम् का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
'नाथ' करुणा-रूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥
पूजनीय रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए ॥

सर्वे सुखिनः

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा करिचत् दुःख भाग् भवेत् ॥

सबका भला करो भगवान
सब पर दया करो दयावान ।
सब पर कृपा करो भगवान
सब का सब विधि हो कल्याण ॥

यज्ञ प्रार्थना

ओम् त्वम् हि नः पिता वसो त्वम् माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे। अथर्व 20.108.2

हे सर्वानन्द सर्वशक्तिमान परम पावन प्रभो! आज की इस पवित्र वेला में सबने मिलकर यह यज्ञ किया है और यज्ञ के माध्यम से सभी आपके द्वार पर नत मस्तक हैं।
प्रभो आप महान हैं, आपने अपनी महिमा के बल पर ही इस सृष्टि की रचना की है और इसे अपने नियमों में चलाते हो। प्रभो! आप अन्तर्यामी हैं, समय-समय पर जिस-जिस को जिस-जिस की आवश्यकता होती है उसे आप बिना माँगे ही सबकी झोली में डालते चले जाते हो। जिन पवित्र विचारों को लेकर हमने यह यज्ञ किया है, प्रार्थना करते हैं कि हमारी वह सभी शुभमनोकामनाएँ पूरी हों। हम आपसे उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, समृद्धि व सुखी जीवन की प्रार्थना करते हैं। परिवार और इष्ट मित्र सभी स्वस्थ हों, संसार के प्राणियों में सद्भाव व प्रेम हो । यही छोटी सी प्रार्थना करते हैं।
आशा है आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे।
ओम् शांति: शांति: शांति: ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव (त्वम् एव)
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी
सब हों निरोग भगवन धन धान्य के भण्डारी ।
सब भद्र भाव देखें सन्मार्ग के पथिक हों
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ॥
हे नाथ सब सुखी हों कोई न हो दुखारी ॥

ॐ

भक्ति भजन

आर्य समाज इन्लैंड एम्पायर

विश्व भारती परिषद् अमेरिका

भजन सूची

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
अब सौंप दिया इस जीवन का	66	दो घड़ी भगवान का ले नाम तू	98
अन्तर्यामी स्वामी तुमको	57	नमस्कार भगवान तुम्हें	78
आनंद स्रोत बह रहा	68	पितु मातु सहायक स्वामी सखा	61
आज मिल सब गीत गाओ	58	प्रेमी भरकर प्रेम में	79
आरती	103	प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना	75
इतनी शक्ति हमें देना दाता	69	बेला अमृत गया	82
इंसान की ख़ुशबू रहता है	91	भरोसा कर तू ईश्वर पर	74
ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा ही	92	मिलता है सच्चा सुख केवल	62
ईश्वर तुम ही दया करो	95	मुझे ऐसा बना दो	64
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई	56	मेरा नाथ तू है	80
ऐ मालिक तेरे बंदे हम	73	मेरे दाता के दरबार में	81
ओम नाम के हीरे मोती	99	मेरे जीवन को कुन्दन बना दो	73
ओम है जीवन हमारा	55	यज्ञ रूप प्रभो	49
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम	70	युग युग से जीव भटकता	85
किसी के काम जो आये	101	सच्चा तू करतार है	83
गाये जा, गाये जा, भगवान की	100	सब जग के आधार, नमस्कार	89
छाया मिलती रही, फूले फलते रहे	93	सत्ता तुम्हारी भगवन	96
जगत में चिन्ता मिटी है उनकी	67	संगठन सूक्त	105
जप ले प्रभु का नाम	53	सुखी बसे संसार, दुखिया रहे न	52
जब तेरी डोली निकाली जायेगी	88	सुन लो भगवन में विनय हमारी	86
जाति को जीवन दो भगवान	102	सुबह शाम भजन कर ले	94
जिसने सारे विश्व को धारण किया	63	शरण प्रभु की आओ रे	72
जीवन की घड़ियाँ	97	शांति पाठ	107
जय जय पिता परम आनंद दाता	75	हम सब मिलके दाता आये	71
तुम्हारी कृपा से जो आनंद पाया	59	हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन	90
तू व्यापक डाली डाली है	65	हे दयामय . . . आधार हो	54
तू है सच्चा पिता, सारे संसार का	77	हे दयामय हम सबों को	60
तेरे दर को छोड़कर	76	हे ज्ञानवान भगवन, हमको भी	87
तेरे पूजन को भगवान	84	राष्ट्रीय प्रार्थना	106

सुखी बसे संसार

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन पूरी होय ॥
विद्या बुद्धि तेज बल सबके भीतर होय ।
दूध पूत धन धान्य से वंचित रहे न कोय ॥
आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर ।
राग द्वेष से चित्त मेरा कोसो भागे दूर ॥
मिले भरोसा आप का हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश ॥
पाप से हमें बचाइये करके दया दयाल ।
अपना भक्त बनाय कर सबको करो निहाल ॥
दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार ।
सात्विक धीरज वीरता सबको दो करतार ॥
नारायण तुम आप हो पाप विमोचन-हार ।
क्षमा करो अपराध सब करदो भव से पार ॥
हाथ जोड़ विनती करूँ सुनिये कृपा निधान ।
साधु संगत सुख दीजिये दया नम्रता दान ॥
सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन पूरी होय ॥

जप ले प्रभु का नाम

जप ले प्रभु का नाम अमृत बरसेगा ।।
नाम प्रभु का अमृत वाणी;
जपले-जपले हरदम प्राणी ।
नाम करे कल्याण अमृत बरसेगा ।। . . . १

नाम प्रभु का सब सुख दाता;
सब का रक्षक सब का त्राता ।
धारण कर ले ध्यान अमृत बरसेगा ।। . . . २

नाम हैं जपते ऋषि-मुनि ज्ञानी;
प्रभु की महिमा जाय ना जानी ।
जितना करो बखान अमृत बरसेगा ।। . . . ३

नाम प्रभु का भ्रांति विनाशक;
सब सुख दायक शान्ति प्रदायक ।
वेद का है यह ज्ञान अमृत बरसेगा ।।
जप ले प्रभु का नाम अमृत बरसेगा ।॥ ४ ॥

हे दयामय.... आधार .....

हे दयामय आपका हमको सदा आधार हो ।
आपके भक्तों से ही भरपूर यह परिवार हो ।।

छोड़ देवें काम को और क्रोध को मद् मोह को ।
शुद्ध और निर्मल हमारा सर्वदा आचार हो ।।

प्रेम से मिल-मिलके सारे गीत गावें आपके ।
दिल में बहता आपका ही प्रेम पारावार हो ।।

जय पिता जय-जय पिता हम जय तुम्हारी गा रहे ।
रात-दिन घर में हमारे आपका जयकार हो ।।

पास अपने हो न धन तो उसकी कुछ परवाह नहीं ।
आपकी भक्ति से ही धनवान यह परिवार हो ।।

ओम है जीवन

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है,
ओम् है कर्त्ता विधाता, ओम् पालनहार है ।।

ओम् है दु:ख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है,
ओम् है बल तेज धारी, ओम् करुणाकन्द है ।

ओम् सब का पूज्य है, हम ओम् का पूजन करें,
ओम् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें ।

ओम् के गुरू-मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन,
बुद्धि दिन-प्रतिदिन बढेगी, धर्म में होगी लगन ।

ओम् के जप से हमारा, ज्ञान बढता जाएगा,
अन्त में यह ओम् हमको, मुक्ति तक पहुँचाएगा

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई।

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।

टुक नींद से अँखियाँ खोल ज़रा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा।

यह प्रीति करन की रीति नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है।
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई . . .

जो कल करना है अज करले,
जो अज करना है अब करले।

जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया,
फिर पछताए क्या होवत है।
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई . . .

नादान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी ! पाप में चैन कहाँ।

जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई।

अन्तर्यामी स्वामी ...

अन्तर्यामी स्वामी तुमको बारंबार प्रणाम है ।।

तुमने लोक रचाये हैं, सूर्य चन्द्र चमकाये हैं,
रूप अनूप बनाये हैं
ऊषा में संध्या में तेरी लीला ललित ललाम है ॥
अन्तर्यामी स्वामी तुमको बारंबार प्रणाम है ।।

विद्युत की गति चंचल में, वन पर्वत जल में थल में,
अलि अवलि फूलों में फल में
सघन लताओं में पक्षिगण गाय रहे गुण ग्राम हैं ॥
अन्तर्यामी स्वामी तुमको बारंबार प्रणाम है ।।

तू महान से महान है; यह वेदों का प्रमाण है
दिया ऋषि ने यह ज्ञान है
शीतल जगती तल पर तुमको सुमिर मिले विश्राम है ॥
अन्तर्यामी स्वामी तुमको बारंबार प्रणाम है ।।

आज मिल सब गीत गाओ

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिसका यश नित गाते हैं, गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ॥

मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर ।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥
आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।

कूप में तालाब में, सिन्धु की गहरी धार में ।
प्रेम रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥
आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।

शादियों में कीर्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वर से चाहिए, करें नारी नर सब धन्यवाद ॥
आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।

गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द कर ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद ॥
आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ।

जो आनन्द पाया

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वाणी से जाये वह क्योंकर बताया ॥
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया ॥

नहीं है वह गुण गन्ध जो घ्राण जाने,
त्वचा से न जाये छुआ औ छुवाया ॥
संख्या में आना असंभव है उसका,
दिशा काल में भी रहे न समाया ॥
तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया . . .

तुझ सा न दाता है तुझ सा न दानी,
इतना बड़ा दान जिसने दिलाया ॥
आत्मोन्नति में तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया ॥
तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया . . .

सत् चित् आनन्द अनन्त स्वरूप,
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया ॥
गूँगे की रसना के सदृश 'अमीचन्द',
कैसे बतायें कि क्या रस उड़ाया ॥
तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया . . .

हे दयामय हम सबों को

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये ॥
कीजिये ऐसा अनुग्रह हम पे, हे परमात्मा ।
हों सभासद इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से ।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या-नाश से ॥
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी ।
छूट जावें दु:ख सारे सुख सदा पावें सभी ॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों ।
शुभ कर्मों में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों ॥
यज्ञ-हवन से हो सुगन्धित अपना प्यारा यह देश ।
वायु जल सुखदायी होवें जायें मिट सारे क्लेश ॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी ।
होवे आपस में प्रीति और बनें परमार्थी ॥
लोभी कामी और क्रोधी कोई भी हममें न हो ।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ॥
अच्छी संगत में रहें और वेद मारग पर चलें ।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें ॥
कीजिए हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से ।
मान भक्तों का बढाओ अपने भक्ति दान से ॥
हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये . . .

पितु मातु सहायक स्वामी सखा

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो ॥

सब भाँति सदा सुखदायक हो, दु:ख दुर्गुण नाशन-हारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ॥

भूलि हैं हम ही तुमको, तुम तो हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ॥

महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझें बिरले बुधिवारे हो ।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम-निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो ॥

यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो ॥

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में ।

है विनती यही, छिन-छिन पल-पल,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

यदि बैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने ।

चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहें संकट ने आ घेरा हो, चाहें चारों ओर अन्धेरा हो ।

पर चित्त न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहें अग्नि में मुझे जलना हो, चाहें काँटों पर भी चलना हो ।

चाहें छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

जिसने सारे विश्व को धारण किया

जिसने है सारे विश्व को धारण किया हुआ ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ ॥
मिलता नहीं है इसलिए अज्ञानियों को वह ।
अज्ञान का है बुद्धि पर परदा पड़ा हुआ ॥
दुनिया के दुख रूप समुद्र से वह पार ।
जगदीश से है प्रेम अति जिसका लगा हुआ ॥
सच्ची खुशी से रहते हैं वे जन सदा अलग ।
मन जिनका विषय भोग में होवे फँसा हुआ ॥
मन तो मलीन वैसा ही पूरण रहा तेरा ।
गंगा में जाके रोज नहाया तो क्या हुआ ॥
खोते हैं खेल-कूद में जो उमर रायगाँ ।
अफसोस उनकी बुद्धि को न जाने क्या हुआ ॥
अज्ञानियों से रहता है 'केवल' वह दूर-दूर ।
खुल जायें ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ ॥
जिसने है सारे विश्व को धारण किया हुआ . . .

मुझे ऐसा बना दो

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता / प्रभु
जीवन में लगे ठोकर ना कहीं ।
जाने अनजाने भी मुझसे,
नुकसान किसी का हो ना कभी ॥

उपकार सदा करता जाऊँ,
दुनियाँ अपकार भले ही करे,
बदनामी ना हो जग में मेरी,
कोई ईनाम भले ही दे ना कहीं ।

तू ही बस मेरा ऐसा है,
दु:ख में भी साथ नहीं तजता;
दुनियाँ मुझे प्यार करे ना करे,
खोऊँ तेरा भी ना प्यार कहीं ।

जो तेरा बनकर रहता है,
काँटों में फूल सा खिलता है;
कितनें ही काँटे पाँव चुभें,
पर फूल भी हों काँटे ना कहीं ।

मन हो मधुपूर्ण कलश मेरा,
आँखों में ज्योति छलकती हो;
तुमसे मधु ऐसा पीने को,
जागता ही रहूँ सोऊँ ना कही ।

मैं क्या हूँ राह मेरी क्या है,
यह सत्य सदा मैं समझ सकूँ;
इस राह पै चलते चलते कभी,
मेरे पाँव थकें ना रुकें ना कहीं ॥

तू व्यापक डाली डाली है

तू व्यापक डाली डाली है, कोई जगह न तुझसे ख़ाली है
तेरी ही अद्भुत माया है, तूने ही जगत बनाया है
सब पर ही तेरा साया है, जग बाग तेरा तू माली है।

सब वृक्ष और बेलें झूम रहीं, तेरे चरणों को हैं चूम रहीं
तेरे प्रेम की वायु से झूम रही, तेरी महिमा अजब निराली है।

सब पक्षी तुझे ही ध्याय रहे, तेरे ही सब गुण गाय रहे
तेरे ध्यान में मन लगाय रहे, तू ही प्रभु सबका वाली है

तू सब जग का दुख हरता है, और सबका पालन करता है
क्या राजा है क्या प्रजा है, तेरे दर पर सभी सवाली हैं।

सब मिलकर तेरे गुण गाते हैं, चरणों में शीश झुकाते हैं
दो भक्ति दान यह चाहते हैं, तेरे दर पर अलख जगा ली है।

जो बात दवा से हो न सके, वह बात दुआ से होती है
जब पूरा सतगुरू मिल जाये, तो बात प्रभु से होती है।

अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथो में।

मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती भर का सब प्यार तुम्हारे हाथो में।
अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

या तो मैं जग से दूर रहूँ , या जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथो में, उस पार हुम्हारे हाथो में।
अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

यदि मानुष ही मुझे जनम मिले, तो तव चरणों का पुजारी रहूँ।
मुझ पूजक की इक इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथो में।
अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

जब जब संसार का बन्दी बन, दरबार तेरे में आऊँ मैं।
तब तब हो पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथो में।
अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ , तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथो में, संसार तुम्हारे हाथो में।
अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

जगत मे चिंता मिटी है उनकी

जगत मे चिंता मिटी है उनकी जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।
वही हमेशा हरे भरे हैं जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ॥

न पाया तुमको किसी ने बल से न पाया तुमको किसी ने छल से ।
वही परम पद् को पा गये हैं जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।
जगत मे चिंता मिटी है उनकी जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।।

न पाया राजा वज़ीर बनकर न पाया तुमको फक़ीर बनकर ।
उन्ही को होते हैं तेरे दर्शन जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।
जगत मे चिंता मिटी है उनकी जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।।

किसी ने जग में करी भलाई किसी ने जग में करी बुराई ।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।
जगत मे चिंता मिटी है उनकी जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।।

प्रभु जी विनती सुनो हमारी बनाओ बिगड़ी दशा हमारी ।
निराश्रयों के तुम आसरा हो तुम्हारे चरणों में आ पड़े हैं ।
जगत मे चिंता मिटी है उनकी जो तेरे चरणों में आ पड़े हैं ।।

आनन्द स्रोत बह रहा

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है ।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥

फूलों में ज्यों सुवास ईख में मिठास है ।
भगवान का त्यों विश्व के कण कण में वास है ।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥

टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही ।
जिस को तू ढूंढता है वो तेरे पास है ।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥

कुछ तो समय निकाल आत्म-शुद्धि के लिये ।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥

आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक ।
तू जब तलक प्रकाश इन्द्रियों का दास है ।
अचरज ये जल में रह के भी मछली को प्यास है॥

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना ॥

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे
तू हमें ज्ञान की रौशनी दे ।
हर बुराई से बचते रहें हम
जितनी भी दे भली जिंदगी दे ।
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन में बदले की हो ना ।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना . . .

हम न सोचे हमें क्या मिला है
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।
फूल खुशियों के बांटे सभी को
सबका जीवन ही बन जाय मधुबन ।
अपनी करुणा का जल तू बहाके
कर दे पावन हर इक मन का कोना ।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना . . . ॥

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

बड़ा कमज़ोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तू जो खड़ा है दयालू बड़ा
तेरी किरपा से धरती थमी
दिया तूने हमे जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके ग़म
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ये अँधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर कुछ न आता नज़र
सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रौशनी में जो दम, तू अमावास को कर दे पूनम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करे हम भलाई करें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार

हम सब मिलके दाता आये तेरे दरबार
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भंडार
जब होवे प्रात: काल निर्मल होके तत्काल
अपना मस्तक झुकाके करके तेरा ख़याल
तेरे दर पे आके बैठा सारा परिवार ॥
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भंडार
लेके दिल में फ़रियाद करते हम तुमको याद
जब हो संकट की घड़ियाँ माँगे तुमसे इमदाद
सब से बढ़ के जग में तेरा ऊंचा दरबार ॥
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भंडार
चाहे दिन हो विपरीत होवे तुझ से ही प्रीत
सच्ची श्रद्धा से गावें तेरी भक्ति के गीत
होवे सब का प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार ॥
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भंडार
तू है सब जग का माली करता सबकी रखवाली
हम है रंग रंग के पौधे तू है हम सबका माली।
पथिक बग़ीचा है ये तेरा सुन्दर संसार ॥
भर दे झोली सब की तेरे पूरण भंडार

शरण प्रभु की आओ

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे।

उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु,
आओ दर्शन पाओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।

अमृत झरना झरता इससे,
पीके अमर हो जाओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।

छल कपट ओर झूट को त्यागो,
सत्य में चित्त लगाओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।

हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति,
दृढ़ विश्वास जमाओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।

कर लो नाम प्रभु का सुमिरन,
नहीं पीछे पछताओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।

छोटे बड़े सब मिलकर ख़ुशी से,
गुण ईश्वर के गाओ रे, यही समय है प्यारे . . . ।।

मेरे जीवन को कुन्दन बना दो

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो,

कोई खोट इसमें रहने न पाये ।

करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला,

हर श्वास हो तेरे चिन्तन की माला ।

मेरे दिल की दुनिया को इतना बदल दो,

कि दुनिया तेरी मुझे गले से लगाये।

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो . . .

घटनाओं की रिमझिम पवन के तराने,

लताओं का नाच और वृक्षों के गानें।

नज़र जिस तरफ़ जाए भगवान मेरी,

अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कुराये।

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो . . .

जगत को मैं अपना परिवार समझूँ,

परिवार को तेरा उपकार समझूं।

कुसंग, लोभ, अभिमान, द्वेष और आलस,

कोई इनमें मुझको सताने न पाये

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो . . .

भरोसा कर तू ईश्वर पर

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

कभी सुख है कभी दु:ख है, यह जीवन धूप छाया है ।

हँसी में ही बिता डालो, बितानी ही यह माया है ।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

जो सुख आये तो हंस देना, जो दुख आये तो सह लेना ।

न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह लेना ।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

ये कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।

तू ख़ुद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया ।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

कहाँ ये था, कहाँ तू था, कभी तो सोच ऐ बन्दे ।

झुका कर शीष को कह दे, प्रभु वन्दे प्रभु वन्दे ।

यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।

जय जय पिता आनन्द दाता

जय जय पिता परम आनन्द दाता,
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता ।
अनन्त और अनादि विशेषण है तेरे,
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहर्ता। जय जय पिता . . .
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना,
कि जिसमें ये ब्रह्माण्ड सारा समाता। जय जय पिता . . .
मैं लालित व पालित हूँ पितृ स्नेह का,
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता। जय जय पिता . . .
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को,
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः। जय जय पिता . . .
मिटाओ मेरे भय को आवागमन के,
फिरूँ न जन्म पाता ओर बिलबिलाता। जय जय . . .
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु,
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता। जय जय पिता . . .
"अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको,
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता। जय जय पिता . .

तेरे दर को छोड़कर

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं,
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं ।

जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाए हैं,
क्या जानूँ इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं।
हूँ शर्मिन्दा आपसे, क्या बतलाऊँ मैं. ... तेरे दर को छोड़कर.

मेरे पाप करम ही तुझसे प्रीत न करने देते हैं,
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे रोक मुझे ये लेते हैं ।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं ... तेरे दर को छोड़कर. . .

है तू नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं,
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं ।
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊं मैं... तेरे दर को छोड़कर. .

जो बीती सो बीती लेकिन, बाक़ी उमर सम्भालूँ मैं,
प्रेम पाश में बँधा आपके गीत प्रेम के गालूं मैं ।
जीवन प्यारे "देश" का सफल बनाऊँ मैं... तेरे दर को छोड़कर. .

तू है सच्चा पिता

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का, ओम प्यारा।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।. . . तू है सच्चा पिता... ...

चांद सूरज सितारे बनाये, पृथ्वी आकाश पर्वत सजाये ।
अंत पाया नहीं, तेरा पाया नहीं पारवारा ।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।
तू है सच्चा पिता . . .

पक्षिगण राग सुन्दर है गाते, जीव जन्तु भी सिर है झुकाते ।
उसको ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो भी प्यारा ।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।
तू है सच्चा पिता . . .

पाप पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पर हमको चलाओ ।
लगे भक्ति में मन, करें सन्ध्या-हवन, जग ये सारा ।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।
तू है सच्चा पिता . . .

अपनी भक्ति में मन को लगाना, कष्ट नन्दलाल सबके मिटाना ।
दुखियों कंगालों का, और धनवालों का, तू ही सहारा ।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।
तू है सच्चा पिता . . .

नमस्कार भगवान तुम्हें

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो,
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।

तुम कण कण में बसे हुए हो, तुझ में जगत समाया है,
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।
तुम दुनिया के हर प्राणी के, जीवन के आधार हो ।
... श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।

सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत की माता हो,
भाई, बन्धु, सखा, सहायक, रक्षक, पोषक, दाता हो।
चींटी से लेकर हाथी तक, सबके सिरजन-हार हो ।
... श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।

ऋषि, मुनि, योगी जन सारे, तुम से ही वर पाते हैं,
क्या राजा, क्या रंक, तुम्हारे दर पर शीश झुकाते हैं ।
परम कृपालु, परम दयालु, करूणा के आधार हो ।
... श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।

जीवन के तूफ़ानों में प्रभु, तुम ही एक सहारा हो,
डगमग-डगमग नैया डोले, तुम ही नाथ किनारा हो ।
तुम खेवनहार हो इस नैया के, और तुम ही पतवार हो।
... श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।

प्रेमी भरकर प्रेम में

प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर ।
मन मन्दिर में गाफिला, झाड़ू रोज़ लगाया कर ।

सोने में तो रात गुज़ारी, दिन भर करता पाप रहा,
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा ।
प्रात समय उठ ध्यान से, सत्संग में तू जाया कर ।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर. ...

नरतन चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं ।
नरतन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर ।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर. ...

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई तो क्या,
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या ।
पहले सबसे पूछकर, फिर तू भोजन खाया कर ।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर. ...

देख दया उस परमेश्वर की, वेद का जिसने ज्ञान दिया,
"देश" तू मन में सोच जरा, कितना है कल्याण किया।
सब कामों को छोड़कर, ईश्वर को तू ध्याया कर ।
प्रेमी भरकर प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर. ...

मेरा नाथ तू है

मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला, मेरे साथ तू है।

चला जा रहा हूँ मैं राहों पै तेरी,
नहीं डर जो राहों में तूफ़ान भारी ।
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है । मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ.. ..

मेरा इष्ट तू है, मैं तेरा पुजारी,
तेरा खेल मैं हूँ, मैं तेरा खिलाड़ी ।
मेरी ज़िन्दगी की हर-एक बात तू है, मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ.. ..

मैं तेरा हूँ, तेरे सदा गीत गाऊँ,
कभी भूलकर ना तुझे भूल पाऊँ ।
तू ही दीन बन्धु, पिता माता तू है, मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ.. ..

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता ।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता ।

क्या साधु, क्या सन्त, गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी ।
अन्तर्यामी अन्दर बैठा, सबका हिसाब लगाता ।
मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता।।

बड़े-बड़े क़ानून प्रभु के, बड़ी-बड़ी मर्यादा ।
किसी को कौड़ी कम नहीं मिलती, मिले न पाई ज़्यादा ।
इसीलिये तो इस जग का वह जगत सेठ कहलाता ।
मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता ।।

चले न उसके आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी ।
उसकी लेन-देन की बन्दे, रीति बड़ी है बांकी ।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता ।
मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता ।।

उजली करनी कर ले बन्दे, करम न करियो काला ।
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला ।
उसकी तेज़ नज़र से बन्दे, कोई नहीं बच पाता ।
मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता ।

बेला अमृत गया

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा ।
साथी सारे जगे, तू न जागा ।

झोलियाँ भर रहे भागों वाले, लाखों पतितो ने जीवन संभाले ।
रंक राजा बने, भक्ति रस में सने, कष्ट भागा ।
साथी सारे जगे, तू न जागा । वेला अमृत गया . . .

कर्म उत्तम थे नरतन जो पाया, आलसी बनके हीरा गँवाया ।
उल्टी हो गई मति, करके अपनी क्षति, रोने लागा ।
साथी सारे जगे, तू न जागा । वेला अमृत गया . . .

धर्म वेदों का देखा न भाला, वेला अमृत गया न संभाला ।
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पे धर, रोने लागा।
साथी सारे जगे, तू न जागा । वेला अमृत गया . . .

"देश" तूने न अब भी विचारा, सिर से ऋषिओं का ऋण न उतारा ।
हंस का रूप था, गदला पानी पिया, बनकर कागा ।
साथी सारे जगे, तू न जागा । वेला अमृत गया . . .

सच्चा तू करतार है

सच्चा तू करतार है, सबका पालन हार है ।
तेरा सबको आसरा, सुखों का भंडार है ।

नदियाँ नाले पर्वत सारे, तेरी याद दिलाते है. . तेरी याद दिलाते है।
ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते है . तेरे ही गुण गाते है।
सच्चा तू करतार है, सबका पालन हार है तेरा सबको. . .

बादल गरजे बिजली चमके, छम-छम वर्षा आती है, . छम-छम . .
मीठी वाणी कोयल बोले, ये ही गीत सुनाती है, . ये ही गीत. .
सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है, तेरा सब को. . .

शुद्ध आत्मा होगी उसकी, नाम प्रभु जो ध्यायेगा, . नाम प्रभु जो
जनम सफल तू करले अपना, अन्त नहीं पछतायेगा, . अन्त नहीं
सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है । तेरा सब को. . .

शुद्ध सच्चिदानंद प्रभु को, वेदों ने बतलाया है, . वेदों ने बतला
अन्त तेरा किसने है पाया, सुन्दर तेरी माया है, . . सुन्दर तेरी
सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है, तेरा सब को. . .

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।

किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत।
तू है निराकार भगवान . . बना मन मन्दिर आलीशान।

यह संसार है तेरा मन्दिर, तू रमा है इसके अन्दर।
धरते ऋषि मुनि सब ध्यान . . बना मन मन्दिर आलीशान।

सागर तेरी शान बतावे, पर्वत तेरी शोभा गावे।
करते तेरा वेद बखान . . बना मन मन्दिर आलीशान ।

तू ही जल में तू ही थल में, तू हर डाल की हर पातल में।
तू हर दिल में मूर्तिमान . . बना मन मन्दिर आलीशान।

तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।
तेरी लीला ईश महान . . बना मन मन्दिर आलीशान।

झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यों भरमाया।
कर कुछ जीवन का कल्याण . . बना मन मन्दिर आलीशान।

युग-युग से जीव भटकता

युग - युग से जीव भटकता, पर चैन कहीं न पाया।
सौ बार मरा जी - जी कर, फिर भी न जीना आया।

वृक्षों पशुओं में भटका, पर पर-उपकार न सीखा।
नित नये पाप करने को, तूने खोजा नया तरीक़ा।
पशु पुरूष में क्या अन्तर है, तू यह भी जान न पाया।

तह करके ताक में रख दीं, जीवन की सभी किताबें।
नित ख़ून पिया निर्बल का, या विष से भरी शराबें।
प्रभु नाम के अमृत रस का, इक जाम न पीना आया।

दुखिया ग़रीब तो तड़पा, पर तेरी दया पिघली ना।
पत्थर का हुआ कलेजा, सीमेंट हो गया सीना ।
सीने से सी ना निकली, दिल फटा न सीना आया।

तू मोर पपीहा बनकर, पी पी न कभी पुकारा ।
सत्संग की वर्षा ऋतु में, मन धोकर नहीं निखारा।
कई बार तेरे जीवन में, सावन का महीना आया।
सौ बार मरा जी - जी कर, फिर भी न जीना आया।

सुन लो भगवन विनय हमारी

सुन लो भगवन विनय हमारी,
हम है बालक शरण तुम्हारी।

भ्रान्ति निराशा दूर भगा दो,
जग-मग आशा दीप जला दो।
हरो विपद बाधाएँ सारी । सुन लो भगवन विनय हमारी . . .

शुभ कर्मों में ध्यान लगावें,
दुर्गुण सारे दूर भगावें।
बने धर्म बालक बल-धारी । सुन लो भगवन विनय हमारी . . .

विद्या पढ़े विवेक बढ़ावें,
जग में सम्पत्ति सुयश कमावें।
मातृभूमि के हों हितकारी। सुन लो भगवन विनय हमारी . . .

भर दो भक्ति प्रकाश हृदय में,
सुख में दुख मे हार विजय में।
हो विश्वास तुम्हारा भारी। सुन लो भगवन विनय हमारी . . .

हे ज्ञानवान भगवन

हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।
करुणा के चार छींटे, करुणा निधान दे दो।
सुलझा सके हम अपनी, जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा ऋतम्भरा सी, बुद्धि का दान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।
अपनी मदद हमेशा, ख़ुद आप कर सकें हम।
इन बाहुओं में शक्ति, हे शक्तिवान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।
दाता तुम्हारे दर पर, किस चीज़ की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को, दौलत की खान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।
हे ईश तुम्हीं हो सबकी, बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल हो जाये, थोड़ा सा ज्ञान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।
डर है "पथिक" तुम्हारे, दर को न भूल जायें।
भक्तों की मंडली में, थोड़ा सा स्थान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन! हमको भी ज्ञान दे दो।

जब तेरी डोली निकाली जायगी

जब तेरी डोली निकाली जायगी,
बिन मुहूर्त के उठा ली जायगी।
उन हकीमों से कहो, जो बोलकर,
करते थे दावा किताबें खोलकर।
यह दवा हरगिज़ न ख़ाली जायगी।
बिन मुहूर्त के उठा ली जायगी . .
धन सिकन्दर का यहीं पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यह कह गया।
यह घड़ी हरगिज़ न टाली जायेगी।
बिन मुहूर्त के उठा ली जायगी . .
होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,
कैसे मुकरोगे वहाँ पर ऐ जनाब।
जब बही तेरी निकाली जायेगी।
बिन मुहूर्त के उठा ली जायगी . .
ऐ! मुसाफ़िर क्यों पसरता है यहाँ,
यह मिला तुझको किराये का मकाँ।
कोठरी ख़ाली करा ली जायेगी।
बिन मुहूर्त के उठा ली जायगी . . .

सब जग के आधार, नमस्कार

सब जग के आधार, नमस्कार नमस्कार।
आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार।

सूरज और चाँद में तेरा ही उजाला,
तूने पहन रखी है सितारों की माला।
महिमा अपरम्पार, नमस्कार नमस्कार। . . .

कोयल की कूह-कूह सबको है भा रही,
पंचम के स्वर में मधुर गीत गा रही।
यही रही पुकार, नमस्कार नमस्कार। . . .

पर्वतों की चोटियों को बादल हैं चूमते,
पृथ्वी सूरज चाँद सितारे सारे ही हैं घूमते।
नियम अनुसार, नमस्कार नमस्कार। . . .

फुलवाड़ी को देखो कैसे फूल हैं निराले,
नीले पीले और गुलाबी कोमल ख़ुशबू वाले।
छाई है बहार, नमस्कार नमस्कार। . . .

आत्मा का रथ कैसा सुन्दर बनाया है,
मन बुद्धि इन्द्रियों से इसको सजाया है।
अष्ट चक्र नव द्वार, नमस्कार नमस्कार। . . .

जगत् जननी माता हमको तेरा ही सहारा है,
तेरे बिना और ना कोई भी हमारा है।
भव से कर दो पार, नमस्कार नमस्कार। . . .

प्रभु अपनी भक्ति का वरदान देना,
शिव संकल्प और सुविचार देना।
वेदों के अनुसार, नमस्कार नमस्कार। . . .

कहे नन्दलाल सबकी आत्मा पवित्र हो, देह हो नीरोग और ऊँचा चरित्र हो।
विनती बारम्बार, नमस्कार नमस्कार। सब जग के आधार, नमस्कार . . .

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल ज़रा न रहा।

परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा।

पुरूषारथ ही इस दुनिया में, सब कामना पूरी करता है।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा।

दुखदायी हैं, सब शत्रु हैं, ये विषय हैं जितने दुनिया के।
वह पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा।

यहाँ वेद विरूद्ध जब मत फैले, प्रकृति की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पाँव जमा न रहा।

यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुए, बलवान हुए विद्वान हुए।
पर मौत के पंजे से "केवल" कोई दुनियाँ में आके बचा न रहा।
हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा।

इन्सान की ख़ुशबू रहती है।

इन्सान की ख़ुशबू रहती है, इंसान बदलते रहते हैं।
दरबार लगा रहता है यहाँ, दरबान बदलते रहते हैं।

जो हिम्मत वाले माँझी हैं, तूफ़ानों से टकराते हैं।
इन तूफ़ानों का क्या कहना, तूफ़ान बदलते रहते हैं।

जो पक्के हैं इकरारों के, इकरारों पर मिट जाते हैं।
जो बातों के बातूनी हैं, ऐलान बदलते रहते हैं।

इक दस्तरख़ान है ये दुनिया, सब मौत का लुकमा बनते हैं।
रहता है दस्तरख़ान यहाँ, मेहमान बदलते रहते हैं।

ये मेला है बस दो दिन का, कुछ कर चलिए कुछ दे चलिए।
इक दिल की हुकूमत बसती यहाँ, सुल्तान बदलते रहते हैं।

ओ भोले मानव ! पागल तू , क्यों मरता है वरदानों पर।
बलिदान ही ज़िन्दा रहते हैं, वरदान बदलते रहते हैं।
इन्सान की ख़ुशबू रहती है, इंसान बदलते रहते हैं।

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

जब से दुनिया बनी है, तब से रोज़ बदलती है,
जो शै आज यहाँ है कल वो आगे चलती है।
देख के अदला-बदली तू आहें क्यों भरता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

दुख-सुख आते जाते रहते सबके जीवन में,
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफ़ान कभी और कभी उतरता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा,
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्काएगा।
देता है जो कष्ट वही, कष्टों को हरता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

वो ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए,
सहे "पथिक" जो काँटे वो ही मंज़िल अपनी पाए।
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

ईश्वर का धन्यवाद

छाया मिलती रही, फूले फलते रहे,
मेरे मालिक तेरा सौ सौ धन्यवाद है;
तेरी मधु गोद में, खिलखिलाते रहे,
प्यारी जननी तेरा सौ सौ धन्यवाद है । १

लहरें यशगान गाती हैं लहरा रहीं,
किरणें चरणों की धूली लगा गा रहीं;
तारे खिलते रहे रात ढलती रही,
झीनी झनकार तेरी ही आवाज है । २

ऐसा है कौन दुःख जिसपे आये नहीं,
काले बादल कभी किसपे छाये नहीं;
आग फिर जल उठी सब धुआँ उड़ चला,
जिन्दगी मेरी तुमसे ही आबाद है। ३

कष्ट मेरे ही कर्मो का है सिलसिला,
तुझसे उनके लिए मैं करूँ क्या गिला;
तू दयावान है, तेरा एहसान है,
दोस्ती तेरी पे मुझको बड़ा नाज है । ४

आज मैं जो भी कुछ हूँ तेरी है दया,
सारा परिवार घरबार तूने दिया;
सत्य सन्तान यह सम्पदा मान यह,
घर ये रौशन तुझी से मेरा आज है ॥ ५

सुबह शाम भजन कर ले!

सुबह शाम भजन कर ले, मुक्ति का जतन कर ले,
छुट जाएं जन्म मरण प्रभु का सुमिरन कर ले।

यह मानव का चोला हर बार नहीं मिलता
जो गिर गया डाली से, वह फूल नहीं खिलता।
मौक़ा है जीवन का, गुलज़ार चमन कर ले।

नर इन कानों से सुन तू संतों की बानी
मन को ठहरा करके, बन जा आत्म ज्ञानी
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओम जपन कर ले।

इस मैली चादर में, हैं दाग लगे कितने
पर ज्ञान के साबुन में , हैं झाग भरे इतने
मिट जायेगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।

सुन वेदों में गूंज रही, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ
बलिदान की कड़ियों में, तू गूँथ नई लड़ियाँ
प्रभु के आगे अब तो, नीची गर्दन कर ले।

ईश्वर तुम ही दया करो

ईश्वर तुम ही दया करो, तुम बिन हमारा कौन है
दुर्बलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है।

माता तू ही, पिता तू ही, बंधु तू ही सखा तू ही
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है ।

जग को रचाने वाला तू, दुखड़े मिटाने वाला तू
बिगड़ी बनाने वाला तू तुम बिन हमारा कौन है ।

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें ख़बर
जायें तो जायें हम किधर तुम बिन हमारा कौन है ।

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन
तेरी पड़ते हम शरण तुम बिन हमारा कौन है ।

पुत्र हैं हम सभी तेरे, तू है पिता परमात्मा
श्रेष्ठ मार्ग पर चला, तुम बिन हमारा कौन है ।

सत्ता तुम्हारी भगवन !

सत्ता तुम्हारी भगवन जग में समा रही है
तेरी सुयश सुगंधी हर गुल से आ रही है।
रवि चंद्र और तारे, तूने बनाये सारे
इन सबमें ज्योति तेरी ही जगमगा रही है।
विस्तृत वसुंधरा पर सागर बहाये तूने
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है।
दिन रात प्रात: संध्या, मध्याह्न भी बनाया
ऋतुएँ पलट पलट कर करतब दिखा रहीं हैं।
सुंदर सुगंधी वाले, फूलों में रंग तेरा
हर ध्यान फूल पत्ती तेरा दिला रही है।
हे ब्रह्म विश्वकर्ता, वर्णन हो तेरा कैसे
जल-थल में तेरी महिमा हे ईश छा रही है।
भक्ति तुम्हारी भगवन, कैसे हमें मिलेगी
माया तुम्हारी भगवन, हमको भुला रही है।
देवी चरण शरण है, तुझ से यही विनय है
हो दूर यह अविद्या, जो हमको गिरा रही है।

जीवन की घड़ियाँ

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो, ओम जपो, ओम जपो।

ओम ही सुख का सार है, जीवन है, जीवन आधार है
प्रीति न उसकी मन से तजो,
ओम जपो, ओम जपो।

चोला यही है कर्म का, करने को सौदा धर्म का
इसके सिवा मार्ग न को,
ओम जपो, ओम जपो।

मन की गति सँभालिए, ईश्वर की ओर डालिये
धोना जो चाहो, जीवन को धो,
ओम जपो, ओम जपो।

साथी बना लो ओम को, मन में बिठा लो ओम को
देश रहा क्यों समय को खो,
ओम जपो, ओम जपो।

दो घड़ी भगवान का ले नाम तू

दो घड़ी भगवान का ले नाम तू
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।

दो घड़ी का ध्यान ही रंग लायेगा,
दे समय थोड़ा सुबह और साम तू।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।

शीशा-ए दिल साफ़ कर आसन जमा,
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।

देश तेरे काम की यह बात है,
पायेगा दुनियाँ में फिर आराम तू।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।

त्यागकर आलस को जा सत्संग में,
प्रेमरस का ऐ भगत पी जाम तू।
छोड़कर दुनियाँ के सारे काम तू।

ओम नाम के हीरे मोती

ओम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली।
ले लो रे कोई ओम का प्यारा आवाज़ लगाऊँ गली-गली।

माया के दीवाने सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा,
धन दौलत और रूप ख़ज़ाना, यहीं धरा रह जायेगा।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।

मित्र प्यारे सगे संबंधी, इक दिन तुझे भुलायेंगे,
कल जो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली।

क्यों करता है मेरी मेरी, तज दे इस अभिमान को,
छोड़ जगत के झूठे धंधे, जप ले प्रभु के नाम को।
गया समय फिर हाथ न आये, तब पछताये घड़ी-घड़ी।

जिसको अपना कह करके, मूरख तू इतराता है।
छोड़ दें सारे साथ विपद में, साथ नहीं कोई जाता है।
दो दिन का यह रैन बसेरा, आख़िर होगी चला चली।

गाये जा गाये जा

गाये जा गाये जा, भगवान की महिमा गाये जा।
सुबह साम मन मंदिर का अंधियारा दूर भगाये जा।

तरह-तरह के खेल हैं इसमें, दुनियाँ एक तमाशा है।
कहीं ख़ुशी है, कहीं गमीं है, आशा कहीं निराशा है।
वो चाहे हँसाये चाहे रूलाये, अपना फ़र्ज़ निभाये जा।

चिन्ता और चिता इस जग में, दोनों समान कहाती हैं,
इक मुर्दे को इक ज़िन्दे को, दोनों समान जलाती हैं।
जो दुख को दिखाये वे ही दुखड़े मिटाये, चिन्ता दूर भगाये जा।

कौन हमेशा रहा जगत में, किसका यहाँ ठिकाना है।
बांध लें अपना बिस्तर बाबा, यह तो देश बेगाना है।
ये दुनियाँ सराय, कोई आये कोई जाये, पथिक यही समझाये जा।

किसी के काम जो आये

किसी के काम जो आये, उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इंसान कहते हैं।

कभी धनवान है इतना, कभी इंसान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इंसान कहते हैं।

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर,
कोई हंस-हंस के जीता है, कोई जीता है रो रो कर।
जो गिरकर फिर संभल जाये, उसे इंसान कहते हैं।

अगर गलती रुलाती है, तो यह राह भी दिखाती है,
मनुष गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इंसान कहते हैं।

अकेले ही जो खा खाकर, सदा गुजरान करते हैं,
यूँ भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इंसान कहते हैं।

जाति को जीवन दो

जाति को जीवन दो भगवान।
आशा का अंकुर उपजा दो, पर हित का पीयूष पिला दो।
सेवा का सन्मार्ग सुझा दो, साहस का सोपान।

प्रेम एकता का वर वर दो, ज्ञान उजाला घर घर कर दो।
कूट कूट हृदयों में भर दो, स्वाभिमान सम्मान।

दलितों के अधिकार दिला दो, बिछुड़ो को फिर गले लगा दो।
भेदभाव का भूत भगा दो, हों सब लोग समान।

विधवा के संकट को टारो, गो-कुल के कुल क्लेश निवारो।
बलहीनों में बल संचारो, निर्णय करो निदान।

देश भक्ति की ज्योति जगा दो, धर्म धाम का द्वार दिखा दो।
कर्मवीर बनना सिखला दो, करो दयालुता का दान।

ॐ

आरती

ओम् जय जगदीश हरे
स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट; दास जनों के संकट
क्षण में दूर करे; ओम् जय जगदीश हरे ॥ १

जो ध्यावे फल पावे; दुःख विनशे मन का
स्वामी दुःख विनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवे; सुख सम्पत्ति घर आवे
कष्ट मिटे तन का; ओम् जय जगदीश हरे ॥ २

मात पिता तुम मेरे; शरण गहूँ मैं किसकी
स्वामी शरण पड़ू मैं किसकी
तुम बिन और न दूजा; प्रभु बिन और न दूजा
आस करुँ मैं जिसकी; ओम् जय जगदीश हरे ॥ ३

तुम पूरण परमात्मा; तुम अन्तरयामी
स्वामी तुम अन्तरयामी
पार ब्रह्म परमेश्वर; परम ब्रह्म परमेश्वर
तुम सबके स्वामी; ओम् जय जगदीश हरे ॥ ४

तुम करुणा के सागर; तुम पालन कर्ता
स्वामी तुम रक्षा कर्ता
मैं सेवक तुम स्वामी; मैं मूरख फलकामी
कृपा करो भर्ता; ओम् जय जगदीश हरे ॥ ५

तुम हो एक अगोचर; सबके प्राणपति
स्वामी सबके प्राणपति
किस विधि मिलूँ दयामय; किस विधि मिलूँ शरण में
तुमको मैं कुमति; ओम् जय जगदीश हरे ॥

दीन बन्धु दुःख हर्ता; तुम रक्षक मेरे
स्वामी तुम रक्षक मेरे
करुणा हस्त बढाओ अपनी शरण लगाओ
द्वार पड़ा मैं तेरे ओम् जय जगदीश हरे ॥

विषय विकार मिटाओ; पाप हरो देवा
स्वामी कष्ट हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढाओ; श्रद्धा प्रेम बढाओ
सन्तन की सेवा; ओम् जय जगदीश हरे ॥

तन मन धन; सब कुछ है तेरा
स्वामी सब कुछ है तेरा
तेरा तुझ को अर्पण; तेरा तुझको अर्पण
क्या लागे मेरा; ओम् जय जगदीश हरे ॥

जय जगदीश हरे
स्वामी जय दीनानाथ हरे ।
भक्त जनों के संकट; दास जनों के संकट
क्षण में दूर करे; ओम् जय जगदीश हरे ॥

संगठन-सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।।

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: ।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ।। ऋग्वेद १०.१९१

ऋषि:- संवनन; देवता:- अग्निः

हिन्दी

हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ,
वेद सब गाते तुम्हे हैं कीजिए धन वृष्टि को ।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।
हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों ,
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढे सुख सम्पदा ।

राष्ट्रिय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्य: शुर इषव्यो-तिव्याधी
महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशु:
सप्ति: पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा: सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे न:
पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम्
योगक्षेमो न: कल्पताम् ॥ यजु. २२/२१

राष्ट्रिय प्रार्थना हिन्दी

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी ॥

होवें दुधारू गौएँ पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही ॥

बलवान सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवे ॥

फल फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी ॥

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिः
आपः शान्तिः ओषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिः विश्वे देवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्वम् शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ यजुर्वेद 36.17 ऋषि दधध्यंग, अथर्वा देवता ईश्वर

द्युलोक में शान्ति विद्यमान है। अंतरिक्ष में शांति है। औषधियां और वनस्पतियां शांति देने वाली हैं विश्व की प्रत्येक दैविक शक्ति शांति से पूर्ण है, ब्रह्मज्ञान शांति से परिपूर्ण है, विश्व की प्रत्येक वस्तु शांति युक्त है, सर्वत्र शांति है, वह शांति मुझे भी प्राप्त हो ।

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में ।
जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में ।
औषधि वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व में जड़ चेतन में ।।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्य जनों के होवे धन में,
और शूद्र के हो चरणन में ।|
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में ।
जीव मात्र के तन में मन में,
और जगति के हो कण कण में ।।

ॐ

असतो मा सद् गमय

मेरी गति असत से सत की ओर हो।

asṭo mā saḍ gamay

Lead me falsehood to truthfulness.

तमसो मा ज्योतिर् गमय

मेरी गति अंधकार से प्रकाश की ओर हो।

ṭamaso mā jyoṭiṛ gamay

Lead me darkness to light, unknown to known

मृत्योर् मा अमृतम् गमय

मेरी गति भय से निर्भयता की ओर हो।

mriṭyor mā amriṭam gamay

Lead me death to immortality, to be brave

जीवेमः शरदः शतम्

सैकड़ों शरद ऋतुओं का सुख भोगें।

jīvèmah śhardah śhaṭam

We may live hundred autumns

अदीनाः स्याम शरदः शतम्

सैकड़ो वर्ष स्वतन्त्र रहते हुए जीवन यापन करें।

adīnāh syām śhardah śhaṭam

We may always live in Liberty

10 Principals of Arya Samāj

1. God is the efficient cause of all true knowledge and all that is known through knowledge.
2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omniscient, just, merciful, unborn, endless, unchangeable, beginning-less, unequalled, the support of all, the master of all, omnipresent, immanent, un-aging, immortal, fearless, eternal and holy, and the maker of all. He alone is worthy of being worshiped.
3. The Vedas are the scriptures of all true knowledge. It is the first prime duty of all Aryas to read them, teach them, recite them and to hear them being read.
4. One should always be ready to accept truth and to renounce untruth.
5. All acts should be performed in accordance with Dharma that is, after deliberating what is right and wrong.
6. The prime object of the Arya Samaj is to do good to the world, that is, to promote physical, spiritual and social good of everyone.
7. Our conduct towards all should be guided by love, righteousness and justice.
8. We should dispel Avidya (ignorance) and promote Vidya (knowledge).
9. One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.
10. One should regard one’s self under restriction to follow altruistic rulings of society, while in following rules of individual welfare all should be free.

Arya Samaj of Inland Empire

Vishva Bharti Parishad USA

A Religious, Cultural, Educational Organization
Non-Profit, Registered

We are committed to provide:
Resources, education, opportunities and teachings
for youngsters to help them:
Understand, observe, learn, perform and to become
familiar with our Vedic-Hindu:
Heritage, culture, rituals, parvas, festivals and utsawas.

and

Hindu literature:
Vedas, Upanishads, Ramayna, Gita, Mahabharta,
Hindu-philosophy
and rich language Sanskrit
and Hindi as well.

www.AryaSamajIE.org

All rights reserved

The booklet is prepared, edited and composed by:
Dr. Som Pal
All rights are reserved by AryaSamatIE.org; Vishva Bharti Parishad USA